सत्यमेव जयते

धरती की पुकार

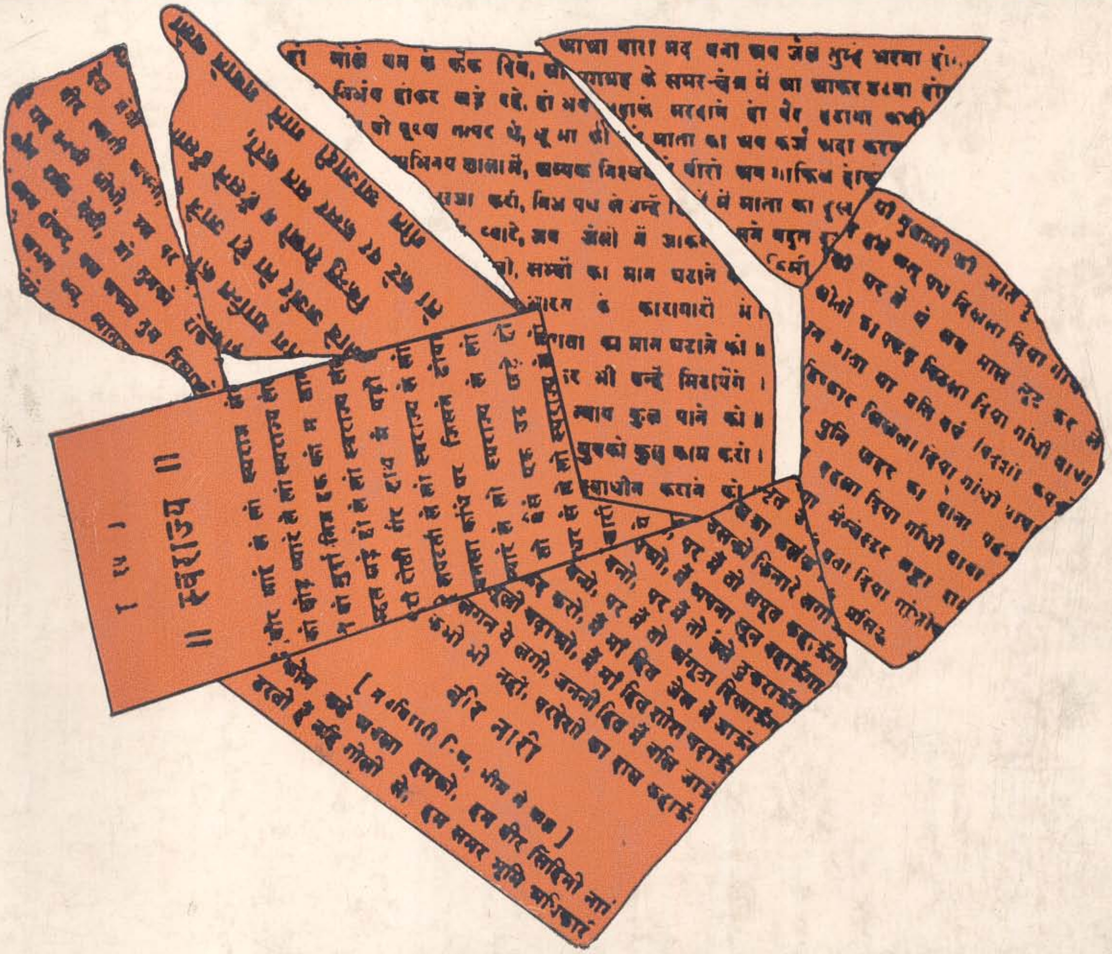

सम्पादक

डा० राजेश कुमार परती

राष्ट्रीय अभिलेखागार
नई दिल्ली

प्रस्तावना

भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार द्वारा हिन्दी में प्रकाशित कविताओं का एक संकलन ''देश भक्ति के गीत'' 1985 में तथा ''आजादी के तराने'' उर्दु भाषा में 1986 में प्रकाशित किये गये थे। ''आजादी के तराने'' का हिन्दी रूपान्तर भी प्रकाशित किया जा चुका है।

इन संकलनों से मिले प्रोत्साहन् से प्रेरित होकर हम हिन्दी भाषा में उपलब्ध प्रतिबन्धित गीतों, गज़लों आदि का एक और संकलन प्रस्तुत कर रहे हैं। राष्ट्र-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत इन रचनाओं ने देश के कोने-कोने में जनचेतना जागृत कर दी थी। यही कारण था कि इन कविताओं और गीतों के प्रचार-प्रसार को तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने कड़ाई से रोका और इन्हें प्रतिबंधित घोषित कर दिया।

प्रस्तुत संकलन में जहां गांधी, नेहरू, भगतसिंह, जैसे अनेक शीर्षस्थ नेताओं के यशोगान से संबन्धित रचनायें हैं, वहीं कुछ ऐसी भी रचनायें हैं जिनमें 1857, जलियांवाला बाग की क्रूर हत्या आदि घटनाओं का वर्णन है। इन रचनाओं के पढ़ने से किस का मन व्यथित हुए बिना रह सकता है। तत्कालीन समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता थी सामाजिक सामन्जस्यता जिसे ध्यान में रखते हुए ऐसी रचनायें भी लिखी गईं जिनमें हिन्दुओं, मुसलमानों तथा किसानों और मजदूरों के पारस्परिक भाईचारे व सहयोग का भी आंकलन है। अतः देश में व्याप्त आज के सामाजिक वातावरण में यह कविताएं एवम् गीत इतने ही प्रासंगिक हैं जितने स्वतंत्रता आंदोलन के समय में थे। भविष्य में भी ऐसे अधिक से अधिक संकलनों की आवश्यकता बनी रहेगी ऐसा निर्विवाद रूप से माना जा सकता है।

उस समय के गीत व कविताएं जिन्हें प्रतिबंधित किया गया था, वे अपने आप में हमारे लिए एक उपलब्धी हैं। चाहे उस समय की परिस्थितियां तथा सरकारी तानाशाही हथकंडे इनके प्रकाशन में बाधक थे परन्तु जनमानस का सरकार के प्रति रोष इतना अधिक था कि वे इस पीड़ा को रोक न सके। यही कारण है कि इन रचनाओं के छपने व जनमानस तक इन्हें जल्दी पहुंचाने के वेग में कुछ अशुद्धियां रह गईं। इस संकलन में जहां अत्यावश्यक प्रतीत हुआ है उनका शुद्धिकरण करने का भी प्रयास किया गया है और शुद्ध रूप उसी पृष्ठ के नीचे दे दिया गया है। संकलन के तैयार करने के लिए मैं श्रीमती मन्जु सहगल, अभिलेखाधिकारी का आभारी हूं जिनके प्रयास से यह कार्य अल्पकाल में संभव हो सका है ।

हमें आशा है कि पूर्व संकलनों की भांति इस संकलन के प्रकाशन से भी हमारे देश की युवा पीढ़ी को यह जानने में सहायता मिलेगी कि देश के साहित्य ने हमारी स्वाधीनता की लड़ाई में कितना अधिक योगदान दिया है।

राजेश कुमार परती
अभिलेख महानिदेशक,
भारत सरकार।

नई दिल्ली
18 अप्रैल, 1991

होंगे शीतल तुम्हें, आग के भी अंगारे ।
मर न सकोगे कभी मौत के भी तुम मारे ।।

क्या गम है गर छूट जायेंगे साथी सारे ।
बह लावेंगे चित्त चन्द्र चमकीले तारे ।।

दुख में भी सुख शांति का—नव अनुभव हो जायेगा ।
प्रेम सलिल से द्वेष का—सारा मल धो जायेगा।।

—गया प्रसाद शुक्ल

विषय सूची

क्र० सं०	शीर्षक	पृष्ठ
1.	मरना होगा	(1)
2.	देश भक्ति	(2)
3.	हिम्मत करो हिम्मत करो	(3)
4.	जुलम ढ़ावो तुम धीरे-धीरे	(4)
5.	खद्दर महिमा	(5)
6.	यहां तुम्हारा गुजर नहीं है	(6)
7.	रंग दे बसन्ती चोला	(7)
8.	एक बालक की प्रतिज्ञा	(8)
9.	प्यारी स्वतन्त्रता	(9)
10.	भविष्य	(10)
11.	प्रतिज्ञा	(11)
12.	छिपा है कहाँ जाके, प्यारा भगतसिंह	(13)
13.	मस्ताना भगतसिंह	(14)
14.	मां रोदन	(15)
15.	झंडे	(16)
16.	राष्ट्रीय पताका	(17)
17.	आज़ादी का तराना	(19)
18.	हमारा गौरव	(20)
19.	हमारी वीरता	(21)
20.	डंका आज़ादी का	(23)
21.	एक देश-भक्त का तराना	(24)
22.	मर्दाना भगतसिंह	(25)
23.	भगत सिंह की माता	(27)
24.	आज़ादी का पैगाम	(28)
25.	तीन शहीद	(29)
26.	चेतावनी	(30)
27.	भारतवासी बनो	(31)
28.	किसान की आन	(33)
29.	किसानों का कर्त्तव्य	(34)

क्र० सं०	शीर्षक	पृष्ठ

30. जितेन्द्र दास . . . . (35)
31. मदन की माता . . . . (36)
32. फूल को शूल . . . . (37)
33. हम . . . . (38)
34. मेरे दिल की आज़ादी . . . . (39)
35. वीर गर्जन . . . . (40)
36. हिन्द करो आज़ाद . . . . (41)
37. स्वदेशी प्रचार . . . . (42)
38. वैष्णव कौन है ? . . . . (43)
39. बन्देमातरम् . . . . (44)
40. भारत भाग्य विधाता . . . . (45)
41. जलियांवाला बाग . . . . (46)
42. मातृ वन्दना . . . . (47)
43. शहीदों की होली . . . . (48)
44. निश्चय . . . . (50)
45. भावना . . . . (51)
46. जवाहर की झलक . . . . (52)
47. ऐ मादरे हिन्द . . . . (53)
48. भाई बटकेश्वरदत्त व भगतसिंह का संदेश . . . . (54)
49. भारतीयों को चेतावनी . . . . (55)
50. एक शैयादे वतन का तराना . . . . (57)
51. क्या तुमको कुछ लाज नहीं ? . . . . (58)
52. बीबी मुंहजोर . . . . (59)
53. सबेरा हो गया . . . . (60)
54. असहयोग . . . . (62)
55. ग़दर . . . . (63)
56. स्वाधीनता . . . . (65)
57. सीख लो . . . . (66)
58. पं० कृष्णकान्त मालवीय . . . . (67)

क्र० सं०	शीर्षक	पृष्ठ
59.	देश प्रेम	(68)
60.	महात्मा जी की 11 शर्तें	(69)
61.	वीरगण तैयार हो	(71)
62.	वतन के वास्ते	(72)
63.	माताओं की वीरता	(73)
64.	चेतावनी	(74)
65.	पहिनों केसरिया बाना	(75)
66.	वीरों का पैगाम	(77)
67.	भारत कंगाल किसने किया	(78)
68.	विलायती कपड़ा निषेध	(79)
69.	वीर की सन्तान	(80)
70.	कल्पना	(81)
71.	हम तो स्वराज्य लेंगे	(83)
72.	देश दशा	(85)
73.	असहयोगियों की खुदा से पुकार	(89)
74.	गर्वन्मेन्ट के ताड़न को	(90)
75.	स्वतंत्र होकर	(91)
76.	शान रख लो	(92)
77.	धरसाना को चलो	(93)
78.	नई उमंगें	(94)
79.	राष्ट्रीय संदेश	(95)
80.	घबड़ाना नहीं	(96)
81.	प्रोत्साहन	(97)
82.	स्वराज्य लेंगे	(98)
83.	जमाने की चाल	(100)
84.	हरगिज न डरना चाहिये	(102)
85.	दिल में ठानी है	(103)
86.	सत्य का महत्व	(104)
87.	भारत देश हमारा प्यारा	(105)

क्र० सं०	शीर्षक	पृष्ठ
88.	भारत माता तेरी जय हो	(106)
89.	स्याह दिल	(107)
90.	आबरू सरकार की	(108)
91.	भारत की मुकद्दमाबाजी	(109)
92.	भारत की विधवायें	(111)
93.	मातृ वन्दना	(112)
94.	विनय	(113)
95.	यदि देश हित मरना पड़े	(115)
96.	स्वाधीनते	(116)
97.	आजादी के दिवानों का	(117)
98.	हे भारत वीरों	(118)
99.	आता है वह जमाना	(119)
100.	प्यारा भारत देश	(120)
101.	ऐ हिन्द के सपूतो	(121)
102.	जै मां पुकारें	(122)
103.	याद रखो जलियांवाला बाग को	(123)
104.	स्वराज्य	(124)
105.	गर्वन्मेन्ट को सर झुकाना पड़ेगा	(125)
106.	यों गोरे बन्दर	(126)
107.	थोड़े दिन	(127)
108.	खुद ही देख लेना	(128)
109.	राज अब जाने को है	(129)
110.	आज़ादी की लगन	(130)
111.	क्रान्ति आहवान	(131)
112.	रण गर्जना	(132)
113.	वीर प्रतिज्ञा	(133)
114.	शहीदाने वतन की सदा	(134)
115.	उठ जाग मुसाफिर	(135)
116.	स्वतन्त्रता पूजन	(136)
117.	न किसी की आंख का नूर हूँ	(137)

क्र० सं०	शीर्षक	पृष्ठ
118.	कोई नहीं है ग़ैर	(139)
119.	राम और रहीम	(140)
120.	किस्मत का फेर	(141)
121.	मन की आँखें खोल	(142)
122.	काया का पिंजरा डोले रे	(143)
123.	वीर प्रतिज्ञा	(144)
124.	गांधी का संदेशा	(145)
125.	चर्खा	(147)
126.	पंजाब का हत्याकाण्ड और असहयोग	(148)
127.	साधु संदेश	(151)
128.	कर जायेंगे	(152)
129.	शहीदों की आहें	(153)
130.	ऐ फिरंगी	(154)
131.	लाखों भगत चढ़ा डालो	(155)
132.	माता का संदेश	(156)
133.	कब तक	(157)
134.	जले दिल को और जला गये	(158)
135.	देश की घायल छाती	(159)
136.	तैयार हैं हम	(160)
137.	आज़ादी के दिवानों का	(161)
138.	तुम्हारी ही आज पहचान	(162)
139.	उद्‌वोधन	(163)
140.	हमारा कर्त्तव्य	(164)
141.	मौत का पैग़ाम	(165)

मरना होगा

कट कट के मरना होगा ।
आओ वीरो मर्द बनो अब जेल तुम्हें भरना होगा ।।
सत्याग्रह के समर-क्षेत्र में आ आकर डटना होगा ।।

सूर लड़ाके मरदाने हो पैर हटाना कभी नहीं ।
मरते-मरते माता का अब कर्ज अदा करना होगा ।।

वक्त नहीं है ऐं वीरो अब गाफिल होकर सोने का ।
दौड़ चलो मैदानों में माता का दुख हरना होगा ।।

याद करो माता का तुमने बहुत दुग्ध है पान किया ।
दुग्ध पिये की लाज बहादुर किसी तरह रखना होगा ।।

शेर मर्द हो वीर बाँकुड़ा याद करो कर्त्तव्यों का ।
मातृ-वेदी पर हँसते-हँसते कट कट के मरना होगा ।।

स्वतन्त्रता की तोप'' शीर्षक पुस्तक से ।

ग्रहकर्ता व प्रकाशक : जगन्नाथ प्रसाद ''अरोड़ा'' बनारस ।

देश भक्ति

जहां देश भक्ति तहां अष्ट सिद्धि खड़ी रहे ।
जहां देश भक्ति वहां नव विध, बखानी है ।।

जहां देश भक्ति तहां बुद्धि को बिक्रोश होत ।
जहां देश भक्ति तहां सम्पत्ति सुख दानी है ।।

जहां देश भक्ति तहां गुण गण निवास करें ।
जहां देश भक्ति तहां प्रभुता प्रमानी है ।।

जहां देश भक्ति तहां सर्ब सुःख ''नारायण'' ।
जहां देश भक्ति तहां सफल जिन्दगानी है ।।

''पहली फुलझड़ी : असहयोग का अगड़बम्ब'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : रामकृष्ण लाल, राजहंस प्रेस, कानपुर ।

हिम्मत करो हिम्मत करो

यारों फ़तह पावोगे तुम हिम्मत करो हिम्मत करो ।
आज़ाद हो जावोगे तुम हिम्मत करो हिम्मत करो ।।

वाजिब है तुमको वीर वर कुर्बान होना देश पर ।
आओ बनो वालेन्टियर हिम्मत करो हिम्मत करो ।।

चूको न वक्ते इम्तहां पहिनो खुशी से बेड़ियां ।
हंस हंस के झेलो सख्तियां हिम्मत करो हिम्मत करो ।।

अय दोस्तो अब मत डरो बढ़ कर चलो जेलें भरो ।
दम दम क़दम आगे धरो हिम्मत करो हिम्मत करो ।।

तुम मत किसी से कुछ कहो चोटें कड़ी दिल पर सहो ।
दम-क़ौम का भरते रहो हिम्मत करो हिम्मत करो ।।

(अख़्तर) करो तन मन फ़िदा हो क़ौम का जिसमें भला ।
गर जान भी जाये तो क्या हिम्मत करो हिम्मत करो ।।

''पहली फुलझड़ी : असहयोग का अगड़बम्ब'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : रामकृष्ण लाल, राजहंस प्रेस—कानपुर ।

ज़ुल्म ढ़ावो तुम धीरे-धीरे

सतावो जुलम ढ़ावो तुम धीरे 2 ।
सहे हिन्द कब तक सितम धीरे 2 ।।

हुये हम सयाने और अधिकार लेंगे ।
जमावेंगे राहो रसम धीरे 2 ।।

तुम्हारे जुल्म का ख़ुदा देगा बदला ।
तुम्हारे हों सारे करम धीरे 2 ।।

लिया लूट हा हमको नादां समझ कर ।
लिया हाथ सारा धरम धीरे 2 ।।

न तुमको गरज हमसे कोई है साहब ।
चलो अपने देश तुम बेशरम धीरे 2 ।।

नहीं एक दिन सरपे आवे क़यामत ।
हो जावोगे सख़्तो, नरम धीरे 2 ।।

सहे अब तलक जुल्म अपना समझ कर ।
सहे हिन्द कब तक सितम धीरे 2 ।।

''अटल राज की कुंजी अर्थात् महात्मा जी की पुकार'' शीर्षक पुस्तक से
मुद्रक एवं प्रकाशक : सरयू लाल, राजा प्रेस, प्रयाग ।

खद्दर महिमा

वतन की गुलामी छोड़ायेगा खद्दर ।
गरीबों की इज्जत बचायेगा खद्दर ।।

हिन्दू है ताना मुसलमान बाना ।
बिनावट में दोनों को लायेगा खद्दर ।।

सड़ा लंका शायर मरा मानचेष्टर ।
विदेशी की धज्जी उड़ायेगा खद्दर ।।

जो कोई भी खद्दर से नफरत करेंगे ।
उन्हें भूत बनकर सतायेगा खद्दर ।।

कहें गान्धी बाबा जो पहिनोगे खद्दर ।
तो शीघ्र स्वराज्य दिलायेगा खद्दर ।।

"अटल राज की कुंजी अर्थात् महात्मा जी की पुकार" शीर्षक पुस्तक से ।
मुद्रक एवं प्रकाशक : सरयू लाल, राज प्रेस, प्रयाग ।

यहां तुम्हारा गुज़र नहीं है

उठा लो डेरा ऐ टोप वालो यहां तुम्हारा गुज़र नहीं है ।
जो मुद्दतों से यों सो रहे थे अब जग पड़े हैं वे शेर सारे ।।

मिटा रहे हैं महज़ ख़ुमारी हुआ फ़जिर क्या खबर नहीं है ।
बजा के डंका निकल पड़े हैं मैदान जंगे आ खड़े हैं ।।

वतन हमारा मज़े उड़ाते हो तुम हमें अब सबर नहीं है ।
दिखाओ भाले चला दो गोली जकड़ दो बेड़ी हमें पकड़ के ।।

झुला दो फांसी पै जी चाहे तौ हमें ज़रा भी उज़र[1] नहीं है ।
निकल पड़े हैं बढ़े चलैंगे हटैंगे पीछे न पैर हरगिज़ ।।

अब तो वतन पै हम मर मिटैंगे दहल उठे वह जिगर नहीं है ।
उठा लो डेरा ऐ टोप वालो ।।

''अटल रांज की कुंजी अर्थात् महात्मा जी की पुकार'' शीर्षक पुस्तक से ।

मुद्रक एवं प्रंकाशक : सरयू लाल, राज प्रेस, प्रयाग ।

(1) उज़्र ।

रंग दे बसन्ती चोला

मेरा रंग दे बसन्ती चोला माई रंग दे बसन्ती चोला ।
इसी रंग में गांधी जी ने नमक पर धावा बोला ।।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ।।

इसी रंग में बीर सिवा(1) ने माँ का बन्धन खोला ।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ।।

इसी रंग में भगत्त दत्त ने छोड़ा बम का गोला ।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ।।

इसी रंग में पेशावर में पठानों ने सीना खोला ।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ।।

इसी रंग में बिस्मिल असफ़ाक़ ने सरकारी ख़ज़ाना खोला ।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ।।

इसी रंग में वीर मदन ने गौरमेन्ट पर धावा बोला ।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ।।

इसी रंग को गुरू गोविन्द ने समझा परम अमोला ।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ।।

इसी रंग में पद्मकान्त ने मार्डन पर धावा बोला ।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ।।

''अटल राज की कुंजी अर्थात् महात्मा जी की पुकार'' शीर्षक पुस्तक से ।
मुद्रक एवं प्रकाशक : सरयू लाल, राज प्रेस, प्रयाग ।
(1) शिवा ।

एक बालक की प्रतिज्ञा

तुम देश का सत्यानाश करो, मैं देश की बात बनाऊँगा ।
तुम जड़ में कुठाराघात करो, मैं अमृत उसमें पठाऊँगा ।।

तुम माता के दूध में दाग लगाओ, मैं उसका कलंक मिटाऊँगा ।
तुम देश की नैया डुबाओ भले ही, मैं उसको किनारे लगाऊँगा ।।

तुम पूत भी होके कपूत बनो, पर मैं तो सपूत कहाऊँगा ।
तुम माता का खून पिओ तो पिओ, मैं अपना खून बहाऊँगा ।।

तुम टुकड़े के हित चाहे कुत्ते बनो, पर मैं तो उसे ठुकराऊँगा ।
तुम चाहे विदेशी के दास बनो, पर मैं तो अंगूठा दिखाऊँगा ।।

तुम ग़ैरों के हित मुझे क़ैद करो, मैं माँ हित जेल में जाऊँगा ।
तुम ग़ैरों के हित मुझे सूली चढ़ाओ, मैं माँ हित शीश चढ़ाऊँगा ।।

''रंजन'' है दिल में लगन ये लगी, जननी हित मैं बलि जाऊँगा ।
दम रहते परन्तु कभी भी नहीं, परदेशी का दास कहाऊँगा ।।

''वर्तमान—आल्हा'' शीर्षक पुस्तक से ।
सम्पादक : श्री युत ''आजाद'' ।
प्रकाशक : शिवनन्दन प्रसाद वर्मा, रूपगंज, छपरा ।
मुद्रक : पं० मन्नालाल तिवारी ।

प्यारी स्वतन्त्रता

तुझको मेरा प्रणाम है प्यारी स्वतन्त्रता ।
तेरे लिये यह प्राण है प्यारी स्वतन्त्रता ।।

धन धाम क्या शरीर अगर काम आये तो ।
तेरे लिये बलिदान है प्यारी स्वतन्त्रता ।।

तेरे लिये जा(1) क्रान्ति मचाता है देश में ।
सच्चा वही बलवान है प्यारी स्वतन्त्रता ।।

शारद मेरी शरीर का एक रोम रोम भी ।
तेरे लिये कुरबान है प्यारी स्वतन्त्रता ।।

''आजादी का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : उमाशंकर दीक्षित, इलाहाबाद ।

(1930)

(1) जो

भविष्य

छात्र हूँ करता जीवन दान जेल जाने से आह नहीं ।
दुखित माता की हुई पुकार मौत की अब परवाह नहीं ।।

हुआ जब माता का अपमान पढ़न की भी तब चाह नहीं ।
धरूंगा कांटों में अब पैर दुख से होगा दाह नहीं ।।

जेल में होगा मेरा जन्म, कृष्ण बन करके आऊँगा ।
दिया यदि दुग्ध पान का लोभ पूतना उन्हें बनाऊंगा ।।

करे शिशुपाल अगर कुछ चाट सुदर्शन चक्र चलाऊँगा ।
बहुत होता है अत्याचार कंस को मजा चखाऊँगा ।।

कंस भी जब मर जावेगा तभी भू होगी महा स्वातन्त्र ।
विश्व ब्रज होवेगा सुख धाम जपेंगे सभी शान्तिका मन्त्र ।।

''आजादी का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से ।
प्रकाशक : उमाशंकर दीक्षित, इलाहाबाद ।
(1930)

प्रतिज्ञा

घर घर में क्रान्ति मचावेंगे ।
भारत स्वाधीन, बनावेंगे ।।

देखा माँ का आह्वान हुआ, आज़ादी का सामान हुआ ।
वेदी पर यज्ञ-विधान हुआ, फिर मुर्दा जोश जवान हुआ ।।

मचला है मन मिट जावेंगे ।
भारत स्वाधीन, बनावेंगे ।।

नवयुग के नव उद्गारों का, दुश्मन के प्रबल प्रहारों का ।
जंजीरों कारागारों का, स्वागत है अत्याचारों का ।।

जीवन का मोह जलावगे[1] ।
भारत स्वाधीन, बनावेंगे ।।

गोदी के लाल लुटावेंगी माताएं बलि बलि जावेंगी ।
माथे पर शिकन न लावेंगी, पति को पत्नियां पठावेंगी ।।

ज़ालिम सरकार मिटावेंगे ।
भारत स्वाधीन, बनावेंगे ।।

भाइयो और बहिनो आओ, माता का मान बचाओ ।
प्राणों की आहुति ले धाओ, गांधी का हुक्म बचा[2] लाओ ।।

दुखित दासता भगावेंगे ।
भारत स्वाधीन, बनावेंगे ।।

बीरो ! आओ सुख दुख झेलो, अब उठो आज खुल कर खेलो ।
माता की अब आशिष[3] लेलो, मौका है तन मन धन देलो ।।

लन्दन तक शीघ्र हिलावेंगे ।
भारत स्वाधीन, बनावेंगे ।।

"आजादी का बिगुल" शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : उमाशंकर दीक्षित, इलाहाबाद ।

(1930)

(1) जलावेंगे

(2) बजा

(3) आशीष

छिपा है कहां जाके प्यारा भगतसिंह

छिपा है कहां जाके प्यारा भगतसिंह ।
किसन सिंह के आंखों का तारा भगतसिंह ।।

बहुत नाम रौशन किया है जहां में ।
कि चमका है बनकर सितारा भगतसिंह ।।

तूने भारत चमन को है सींचा लहू से ।
कहां जा बसा होके न्यारा भगतसिंह ।।

नौजवानों के हेतु हुए आप गांधी ।
रहे राष्ट्र के एक गुवारा भगतसिंह ।।

किया काम बेशक है हिंसा का तूने ।
हुआ निन्दनीय यह तुम्हारा भगतसिंह ।।

मगर देश हित के लिये जान देदी ।
बढ़ा शान तेरा हमारा भगतसिंह ।।

बुरा हाल है देश भारत का ऐ ''लाल'' ।
होवे जन्म तेरा दुबारा भगतसिंह ।।

''आज़ादी का चिराग'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : बाबू रामचन्द्र चन्द्रदेव, गया ।

मस्ताना भगतसिंह

आज़ादी का दिवाना था मस्ताना भगतसिंह ।
बम केश में पकड़ाना ये दीवाना भगतसिंह ।।

आलम की एक शान था मस्ताना भगतसिंह ।
हम बागीका अरमान था मस्ताना भगतसिंह ।।

लाहौर का रहने वाला था वो शेरोबबरदिल ।
आज़ादी की थी चाह उसे मस्ताना भगतसिंह ।।

देता था लाल परचा लाहौर के थानों में ।
हो जावो सावधान ये कहता था भगतसिंह ।।

होती थी मीटिंग असेम्बली में जिस वक्त फेका बम ।
इस केस में पकड़ा गया मस्ताना भगतसिंह ।।

श्रीराजगुरु और सुखदेव दोनों थे उसके साथी ।
फांसी हुई तीनों को मस्ताना भगतसिंह ।।

''आज़ादी का चिराग'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : बाबू रामचन्द्र चन्द्रदेव, गया ।

मां रोदन

ऐ हिन्द के सपूतो! क्या है ख़ता हमारी ।
जो आज गिर रही हूँ आँखों से मैं तुम्हारी ।।

मुख चूम चूम मैंने है बोलना सिखाया ।
हा! वह मेरी मुहब्बत तुम देते हो विसारी ।।

हिन्दी हूँ माँ तुम्हारी कुछ तो नज़र उठाओ ।
देखो पिता तुम्हारा भी हो रहा भिखारी ।।

खाती हूं लात दर दर जीती हूं बेहया हूं ।
पर क्या करूँ जिगर में इक आस है तुम्हारी ।।

तुम लाख कैसे ही हो, ख़ूने जिगर हो अपने ।
इक दिन कभी तो बच्चो! सुध लोगे ही हमारी ।।

''आज़ादी का डंका'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : बेनीमाघो गुप्त, इलाहाबाद
(1930)

झंडे

जीवन ज्योति जगाने वाले ।
भय की भ्रान्ति[1] हटाने वाले ।।

तेरे स्वागतार्थ हमने, फूल के सूल सजाये हैं ।
सदियां बीती आह न निकली, कितने शीश चढ़ाये हैं ।।

शान्ति नहीं पर शान्त पड़े हैं ।
देख अरे हम भ्रान्त खड़े हैं ।।

सन्मुख तेरे हमने अपने, कुछ कर्त्तव्य दिखाये हैं ।
सेवा में हंस 2 मरने के, दिन अब फिर से आये हैं ।।

जग की क्रांति बढ़ाने वाले ।
जग की क्रान्ति घटाने वाले ।।

देखो ! सागर भैरव स्वर से तुम्हारा गाना गाता है ।
वह अपनी लहरों में तेरे तीन रंग दिखलाता है ।।

''आज़ादी की बांसुरी'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : विजयकुमार सिन्हा ।

(1) भ्रान्ति

राष्ट्रीय पताका

राष्ट्रगगन की दिव्य ज्योति, राष्ट्रीय पताका नमो नमो ।
भारत जननी के गौरव की अविचल शाका नमो नमो ।।

करमें लेकर इसे शूरमा तीस कोटि भारत संतान ।
हंसते हंसते मातृ भूमि के चरणों पर होंगे बलिदान ।।

हे घोषित निर्भीक विश्व में तरल तिरंगा नवल निशान ।
वीर हृदय खिल उठें मारलें भारतीय क्षण में मैदान ।।

हो नस-नस में व्याप्त चरित शूमा[1] शिवा का नमो नमो ।
राष्ट्रगगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो ।।

नवयुवको स्वतंत्र समर में नवजीवन संचार करो ।
शस्त्र अहिंसा से दलकर दासता दुर्ग को छार करो ।।

शांति क्रांति युग में है वीरो ! जीवन सुमन निसार करो ।
ऊँचे स्वर से एक साथ जननी की जय जयकार करो ।।

शक्ति देख कर शत्रु शिविर में मचे सनाका नमो नमो ।
राष्ट्रगगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो ।।

उच्च हिमालय की चोटि पर जाकर इसे उड़ायेंगे ।
विश्व विजयिनी राष्ट्र पताका का गौरव फहरायेंगे ।।

समरांगण में लाल लाड़िले लाखों बलि बलि जायेंगे ।
सब से ऊंची रहे, न इसको नीचे कभी झुकायेंगे ।।

गूंजे स्वर संसार सिंधु में स्वतंत्रता का नमो नमो ।
राष्ट्रगगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो ।।

''आज़ादी की बांसुरी'' शीर्षक से ।

प्रकाशक : विजयकुमार सिन्हा ।

(1) शूरमा

आज़ादी का तराना

भारत न रह सकेगा, हरगिज गुलाम खाना ।
आज़ाद होगा होगा आता है वह जमाना ।।

खूं खौलने लगा है, हिन्दूस्तानियों का ।
कर देंगे जालिमों का, अब बन्द जूल्म[1] ढाना ।।

अब भेड़ और बकरी, बनकर न हम रहेंगे ।
इसपस्त हिम्मतो[2] का, होगा कहीं ठीकाना[3] ।।

परवाह अब किसे है, इस जेल और दमन की ।
एक खेल हो गया है, फांसी पै झूल जाना ।।

कौमी तिरंगे झंडे पर दिल फिदा है अपना ।
मुस्लिम मसीह, हिन्दू गाते हैं एक तराना ।।

भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे ।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ।।

''आजादी की बांसुरी'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : विजयकुमार सिन्हा ।

(1) जुल्म

(2) पस्तहिम्मती

(3) ठिकाना

हमारा गौरव

विदित है गौरव सर्व जहान, आर्य वीरों के हम सन्तान ।
कर्म क्षेत्र में हम विचरेंगे, नहीं अनर्थ से कभी डरेंगे ।।

जननी का दुःख बेगी हरेंगे, अधिकारों के हेतु मरेंगे ।
करेंगे अपना देश उत्थान, आर्यवीरों के हम सन्तान ।।

सच्चे भारत वासी हैं हम, सु-कीर्ति के उपवासी हैं हम ।
ईश्वर के विश्वासी हैं हम, कर्मवीर सन्यासी हैं हम ।।

देश के त्रान, जाति के प्रान[1], आर्य वीरों के हम सन्तान ।
हममें आत्म शक्तिका बल है, जिसके सम नहीं कोई कल है ।

सच्चा वास्तव उपासक दल है, हमको यह विश्वास अटल है ।
आनपर करैं आत्म बलिदान, आर्य वीरों के हम सन्तान ।।

हमीं थे राम, कृष्ण बलबीर, हमीं थे हरिश्चन्द्र प्रणवीर ।
हमीं थे अर्जुन सुत बरबीर, हमीं थे गङ्ग तनय रणधीर ।।

हमीं थे शिवा प्रताप महान, आर्य वीरों के हम सन्तान ।
तिरंगा लेकर राष्ट्र निशान, फिरें हम समर भूमि मैदान ।।

करेंगे रिपुदल का अविसान, देश हित 'लक्ष्मी' देगें जान ।
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान, आर्य वीरों के हम सन्तान ।।

''आज़ादी की बांसुरी'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : विजयकुमार सिन्हा ।

(1) प्राण

हमारी वीरता

कभी था उन्नत भारतवर्ष, सभी बातों में था उत्कर्ष ।
आज पर सबसे पीछे पड़ा, नीच समझा जाता है बड़ा ।।

कभी थे कर्म-वीर गम्भीर, मृत्यु की भी न हमें थी पीर .
आज पर मारने से डर रहें, कामिनी काचन में हैं बहे ।।

कभी थे युद्ध-वीर रणधीर, समरमें चमकाते शमशीर ।
बने पर ऐसा डरपोक, गीदड़ो से डरते, हा शोक ।।

कभी थे दान वीर हम बड़े, देह भी दे देते रह खड़े ।
आज कौड़ी के हैं हम तीन, हुए हैं हुए हैं विषय मोह में लीन ।।

कभी थे धर्म-वीर संतान, कि हँस हँस देते थे प्राण ।
आज हम बने भीरु डरपोक, हाय हँसते होंगे सुरलोक ।।

कभी थे हम ऐसे भी बली, अकेले कर देते थे खलबली ।
आज सब मिलकर भी हैं दीन, तेज़ घट गया हुए बलहीन ।।

कभी थे दिग्वजयी[1] भूपाल, हार जाता था हमसे काल ।
आज धरती नहीं सकते पाल, चली जाती इज्जत यह हाल ।।

कभी थे गीता-गायक बने, समर में वीर भाव से सने ।
आज डर लगता सुनकर नाम, युद्ध के पहले जाता प्राण ।।

5—103 Dte. of Archives/91

कभी थे धनुर्विद्या आचार्य, शब्द-वेधन होता था कार्य ।
आज पर देख शत्रुको हाय, ढीलीपड़ जाती धोती, काया ।।

कभी रण विद्या में निपुण, अस्त्र में थे ऐसे भी गुण ।
लौटता था रिपुको संहार, हुआ वह स्वप्न समान बिसार ।।

सुमात्रा, जावा, लंका, चीन, कभी थे सभी बने आधीन ।
आज पर हम ही हैं परतंत्र, पढ़ा कैसा आवाहन मंत्र ।।

शिवाजी या प्रतापसे वीर, दिखाया मुगलों को भी तीर ।
आज पर लाल मुरेठा देख, मृत्यु अपनी लेते हैं लेख ।।

राज्यको तुच्छ सदाही लखा, बचना अपना संततदृढ़ रखा ।
आज है लिया लोभ ने घेर, यही देखो दिन का है फेर ।।

कभी थे हम शाहों के शाह, आज हैं बने हाय! गुम राह ।
कहाते काले, नीच, गुलाम, लुटी इज्जत सारा धन-धाम ।।

''आजादी की बांसुरी'' पुस्तक शीर्षक से ।

प्रकाशक : विजयकुमार सिन्हा ।

(1) दिग्विजयी

डंका आजादी का

भारत में डंका आज़ादी का बजवा दिया गांधी बाबा ने ।
सत्याग्रह झण्डा दुनियां में फहरा दिया गांधी बाबा ने ।।

सर पर गठरी थी गुलामी की अति दूर थी हम से आज़ादी ।
बनकर प्रहलाद हमें सत् पथ दिखला दिया गांधी बाबा ने ।।

घुस गये विदेशी घर में थे सब माल लूट कर ले जाते ।
सद शुक्र हाथ सोतों का पकड़ बिठला दिया गांधी बाबा ने ।।

पैंसठ करोड़ धन जाता था प्रति वर्ष विदेशी कपड़ों से ।
तब मन्त्र विदेशी बहिष्कार सिखला दिया गांधी बाबा ने ।।

दे ज्ञान हमें चर्खे का पुनि खद्दर का बाना पहना कर ।
दिल गोरे चमड़े वालों का दहला दिया गांधी बाबा ने ।।

निश्चय ही दिवाला निकलेगा मैन्चेस्टर लंकाशायर का ।
गर उस पथपर हम चलें सभी जो बता दिया गांधी बाबा ने ।

टूटा कानून नमक का ज्यों यों ही प्रसिद्ध[1] सब टूटेंगे ।
है भद्र अवज्ञा का पथ अब दर्शा दिया गांधी बाबा ने ।।

''गांधी गीत सागर'' शीर्षक पुस्तक से ।

संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : लाला बाबूलाल, बुकसेलर कानपुर ।
(1930)

(1) प्रतिबन्ध

एक देश भक्त का तराना

हे ईश्वर मेरे यदि मुझको गहने की अभिलाषा हो ।
हाथ हथकड़ी पांवन[(1)] बेड़ी तब मम पूरन आशा हो ।।

कैसी ही में दीन दुखी हूं नहि हूं शेर दिलावर मैं ।
परन्तु देश हित मेरे मित्रो सर करदू न्यौछावर मैं ।।

थर थर नहीं कांपूगा हरगिज नहीं कराऊंगा हांसी ।
मुझै वतन की खातिर चाहै शत्रु चढ़ा देवै फांसी ।।

मित्र देश की धुनि में तो चारौं[(2)] दिश में करूं पयान
होमरूल के उपदेशों से ब्यापै बिलकुल नहीं थकान ।।

कहता फिरूं यही मैं तो बस गांव 2 के लोगों से ।
होकर के स्वाधीन भोगिये सुख स्वराज के भोगों से ।।

दुशमन मेरे सीने में जब गोली मारे इक दम गाज ।
''विचित्र'' अंत भी यही कहैगा हमतो लेकर हटें सुराज[(3)] ।।

''स्वराज्य की धूम'' शीर्षक पुस्तक से।

प्रकाशक : सीताराम बुकसेलर, अलीगढ़।

प्रिंटर : पं० जगदीश प्रसाद शर्मा, अलीगढ़।

(1922)

(1) पावन

(2) चारों

(3) स्वराज

सुखदेव भगत—राजगुरू की फांसी

सुखदेव भगतसिंह राजगुरू ।
आजादी के दीवाने थे ।।

हस हँस कर लटके फांसी पर ।
भारत मां के मस्ताने थे ।।

वो मरे नहीं हैं जिन्दा हैं ।
वो अमर शहीद कहायेंगे ।।

वह प्यारे वतन पर निशार ।
वो वीरों में मरदाने थे ।।

यह मरजी उस मालिक की थी ।
यह उन्हें खेल दिखाये हैं ।।

था उनको लिखा कुर्बान होना ।।
फांसी के मुफ्त बहाने थे ।।

ब्रिटिश ने कहा मांफी मांगो ।
तो हो जिन्दगानी तीनों की ।।

हंस हंस के सबों ने जवाब दिया ।
नहीं हश्र में दाग लगाने थे ।।

दुःख दर्द से तूने पाला था ।
कुछ काम न हम आये तेरे ।।

आजाद न मां कर तुझको ।
चले मालिक के ये मनमाने थे ।।

''भगत सिंह की वीरता'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : राधेश्याम पुस्तकालय, कलकत्ता ।

भगतसिंह की माता

मेरे जीवन प्राण भगतसिंह तुम इन आंखों के तारे थे ।
वृद्धा के आधार तुम्हीं दुखिया के एक सहारे थे ।।

चातक के खाती[1] बिन्दु हाय तुम क्यों भूतल परजाय पड़े ।
ऐ नन्हें नादान तुझे मैं हेर रही थी खड़े खड़े ।।

निज देश हेतु तन दिया मुझे संतोष हुआ पूरा 2 ।
है खेद यही जल्लादों का कुण्ठित अब भी न हुआ छूरा ।।

तुम परम-पिता की गोदी में हंस करके लोट लगाना ना
हत्यारों की पोल खुलासा कहना जरा छिपाना ना ।।

मैं धन्य हुई ऐ लाल तेरी कुरबानी के हो जाने से ।
लाखों ही मुझको लाल मिले बस तेरे ही खो जाने से ।।

तेरी अस्थियों की माला मैं वक्षस्थल पर धारुंगी ।
चौरासी के चक्कर में भी तुझको नहीं विसारुंगी ।।

भस्मी तेरी से भाल शुद्धकर तनपर उसे सवारुंगी ।
ऐ मेरे अभिमन्यु तुझे मैं चितसे नहीं उतारुंगी ।।

''भगतसिंह की वीरता'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : राधेश्याम पुस्तकालय, कलकत्ता ।

(1) स्वाती

आज़ादी का पैगाम

आबरू पर मुल्क की हम सब फिदा हो जायंगे ।
कांग्रेस पर हर तरह से हम फिदा हो जायंगे ।।

हासिल आज़ादी करेंगे जिस तरह भी हो सके ।
देख लेना दास के नकशे कदम हो जायंगे ।।

क्या हमें कमजोर समझे हो निहत्था जान कर ।
गर बिगड़ बैठे तो फिर हम इक बला हो जायंगे ।।

आग से मत खेलना हम हैं बबूले आग के ।
गर भड़क उठे तो पेग़ामे कज़ा हो जायंगे ।।

अन्दलीबाने चमन लो फिर बहार आने को है ।
आ गया है वक्त अब माले रसां हो जायंगे ।।

माल की होगी जरुरत तो लुटा देंगे गौहर ।
मुल्को मिल्लत के लिये हम सब गदा हो जायंगे ।।

एक नये अन्दाज से किश्ती चलेगी मुल्क की ।
और जवाहरलाल नेहरू ना खुदा होजायंगे ।।

आने वाला वक्त है लो देख लेना दोस्तो ।
आज जो आज़िज़ हैं कल वह क्या से क्या हो जायेंगे ।।

''भारतीय वीर'' शीर्षक पुस्तक से।

प्रकाशक : खेमचन्द बुकसेलर, देहली।

मुद्रक : कुंवर वीरेन्द्रसिंह भदौरिया, देहली।

तीन शहीद

सुखदेव, भगतसिंह राजगुरू ये तीनों देश दुलारे हैं ।
फांसी पै लटक कर जान जो दी, जी जानसे हमको प्यारे हैं ।।

यह मौत नहीं, यह जीवन है, यह मरना नहीं, यह जीना है ।
नामूसे--वतन पै शहीद हुए, नामूसे--वतन को प्यारे हैं ।।

वह अपनी जान पै खेले हैं, बेलाग है उनकी कुर्बानी ।
ईसार के चर्ख-बाला पर, रोशन ये चमकते तारे हैं ।।

गांधी ने सुनी जिस वक्त खबर, अफ़सोस किया औ फरमाया ।
''मेरी तहरीक के हक़ में उनके खून के कतरे शरारे हैं'' ।।

जब उनकी जवानी का नक्शा, आंखों के आगे आता है ।
मग़मूम हमातन रंजोग़म से हो जाते हम सारे हैं ।।

हम अपने क़ौमी शहीदों की, क्यों याद दिलों से दूर करें ।
क्या और किसी ने भुलाए हैं, क्या और किसीने बिसारे हैं ?

''भारतीय वीर'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : खेमचन्द्र बुकसेलर, देहली ।

मुद्रक : कुंवर वीरेन्द्रसिंह भदौरिया, देहली ।

6—103 Dte. of Archives/91

चेतावनी

जागो, हुआ सबेरा, गांधी जगा रहा है ।
यह आत्म-बल-प्रबर्द्धक, शुभ काल जा रहा है ।।

अन्याय की निशा से, अंधेर से न डरना ।
सूरज-स्वराज्य अपनी लाली दिखा रहा है ।।

सुस्ती के बिस्तरे से, फुरती से उठ खड़े हो ।
सब जग चुके तुम्हीं पर दारिद्र छा रहा है ।।

हों नौजवान तुमको जग जाना चाहिये अब ।
सोने दो वृद्धजन को आलस्य आ रहा है ।।

यह दासता तो सुखका सपना है, भ्रम है 'योगी' ।
स्वाधीनता के सुख का अवसर ये आ रहा है ।।

''शहीदों के तराने'' शीर्षक पुस्तक से ।

लेखक एवं संग्रहकर्ता : भोलानात दर्दी ।

प्रकाशक : बाबू सूर्यपाल सिंह, आरा ।

भारतवासी बनो

फैशनेवुल बनो मत यार भारतवासी बनो ।
मुंह पर हर रोज़ अगर पाउडर मलावोगे ।।

कोट पतलून हैट टाई भी लगाओगे ।
बनो हज़ार, पै पदवी न गोरी पावोगे ।।

जहां जावोगे काले मैन ही कहावोगे ।
होंगे दोनों तरफ़ शर्म सार, भारतवासी ।।

देशी भाषा को भुला सीख ली इंगलिश बानी ।
ब्रिंग* वाटर† हि कहैं जब कि वो मांगैं पानी ।।

लाश पर उनके अजब होवेगी ऐं आसानी' ।
कोई ईसाई बतावै कोई हिन्दुस्तानी ।।

मिट्टी क्यों करते अपनी हो खावार ।
गर हो इन्सान तो इन्सानों के से काम करो ।।

मुल्क मज़हब को न इस तरह से बदनाम करो ।
देश से अपनी दशा को ज़रा मिलान करो ।।

कैसी ग़फ़लत में पड़े सोते हो कुछ ध्यान करो ।
गांधी बाबा की सुन लो पुकार ।।

तुम्हारी जननी ने तुमको यहां पे जाया है ।
मातृ-भूमी ने तुम्हें गोद में लिटाया है ।।

गऊ माता ने तुम्हें दूध भी पिलाया है ।
हिन्द की आबोहवा ने तुम्हें जिलाया है ।।

ऋृण ए सर पर तुम्हारे हैं चार ।
फैशनेबुल बनो मत यार भारतवासी बनो ।।

मिट गया इससे-सब धन हमारा ।
अब जो बाकी है उसको संभालो, ।
मैनचेस्टर के सब कराखाने ।।

[*लावो पानी]

''शैतानी पिटारा'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक :मन्नाालाल पाठक ।

लेखक एवं संग्रकर्ता : रामजियावन लाल चतुर्वेदी, रायवरेली ।
(1923)

किसान की आन

कब तक बने रहेंगे हम ही, जग में दुखिया दीन किसान ।

और देश के तो किसान सब भोगत स्वर्ग महान ।
हम ही जनमे जा भारत में दुख-दारिद की खान ।। कब तक०

काहुं दिन हमहीं हते विश्व में 'धनपति विद्यावान' ।
अब तो 'काले कुली हरामी पाजी बेईमान' ।। कब तक०

दुनिया भर के हम शासक थे न्यायी, नीति-निधान ।
पड़े गुलामी में दुख भोगें ऊकैं सकल जहान ।। कब तक०

पूँजीपति, हुकाम मौजते खूब बनावत शान ।
हम ही दीखत लटी नारि के चाहिं सो मसफत आन ।। कब तक०

योंहीं झींकत रहों जनम भरि तौ न होहि कल्यान ।
करि संगठन उठेंगे जब हम हैं जाहिं सब के कान ।। कब तक०

सहि-सहि अत्याचार उठे अब जगके वीर किसान ।
अत्याचार और ढक्खनु को मिटि गयो सर्व निशान ।। कब तक०

'निर्मय' हम हू दिखला देंगे अब अपने अरमान ।
कै वो सुखी स्वतन्त्र रहेंगे कै होंगे बलिदान ।। कब तक०

''किसानों का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से ।

मुद्रक : सस्ता — साहित्य प्रेस, अजमेर ।

किसानों का कर्त्तव्य

कभी न पहनों वस्त्र विदेशी देकर आग जलाओ तुम ।
घरू शुद्ध खद्दर ही पहनो चरखा-चक्र चलाओ तुम ।।

ब्याह-कजि में फिजूल-खर्ची बिल्कुल बन्द कराओ तुम ।
कभी न झूठी देहु गवाही सत्य पन्थ अपनाओ तुम ।।

घर-घर में और गाँव-गाँव में किसान-पन्थ गुन गाओ तुम ।
बैर-भाव और फूट-कूमति ये सब को दूर भगाओ तुम ।।

आपस में कर मेल सुमति से दृढ़ संगठन दिखाओ तुम
गाँव-गाँव में निर्भय होकर किसान सभायें बनाओ तुम ।।

अपने अनजान भाइयों को नित हित की बात बताओ तुम ।
किसान-सभा के मैम्बर बनकर अपने दुःख मिटाओ तुम ।।

सहो कभी ना जुल्म किसी के रिश्वत नहीं लिजीअ तुम ।
कायरता, दब्बूपन छोड़ो 'वीर-किसान' कहाओ तुम ।।

इस प्रकार से किसान-बाबा निज कर्त्तव्य निभा लेवें ।
भूमि और नम-मंडल तक में अपनी धूम मचा देवें ।।

अपने अन्न-भाई पर अधिकार किसानों का होगा ।
हैं किसान ही पृथ्वी पति गुंजार किसानों का होगा ।।

''किसानों का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से ।

मुद्रक : संस्ता साहित्य प्रेस, अजमेर ।

जितेन्द्र दास

क्या लिखें आजाद होकर हम कहानी ''दास'' की ।
दिल अगर हो सुनो दिल से कहानी ''दास'' की ।।

फाके मस्ती में भी मस्तों की तरह वो मस्त था ।
जेल में ही कट गई सारी जवानी दास की ।।

शौक से दुनियां के लोगों को यही कहना पड़ा ।
देश सेवा के लिये थी जिन्दगानी दास की ।।

''लक्ष्मी बाई की वीरता'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : प्रभुदयाल डंडे वाले भजनोपदेशक ।

मुद्रक : बाबू सूरजभान गुप्त
केसरी प्रेस, बेलनागंज, आगरा ।

मदन की माता

मेरे जीवन प्राण मदन तुम इन आँखों के तारे थे ।
वृद्धा के आधार तुम्हीं दुखिया के एक सहारे थे ।।

चातक के स्वाती बिन्दु हाय तुम क्यों भूतल पर जाय पड़े ।
ऐ नन्हें नादान तुझे मैं हेर रही थी खड़े खड़े ।।

निज देश हेतु तन दिया मुझे संतोष हुआ पूरा २ ।
है खेद यही जल्लादों का कुण्ठित अब भी न हुआ छूरा ।।

तुम परम पिता की गोदी में हँस करके लोट लगाना ना ।
हत्यारों की पोल खुलासा कहना ज़रा छिपाना ना ।।

मैं धन्य हुई ऐ लाल तेरी कुरबानी के हो जाने से ।
लाखों ही मुझको लाल मिले बस तेरे ही खो जाने से ।।

तेरी अस्थियों की माला मैं वक्षस्थल पर धारूँगी ।
चौरासी के चक्कर में भी तुझको नहीं विसारूँगी ।।

भस्मी तेरी से भाल शुद्ध कर तन पर उसे संवारूँगी ।
ऐ मेरे अभिमन्यु तुझे मैं चित से नहीं उतारूँगी ।।

''पंजाब का खून'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : फूलचन्द जैन, जबलपुर ।

फूल को शूल

लड़ने मरने कटने को पंजाबी सदा रहे तैयार ।
तेरे ही हित जिनने जालिम, जर्मन की झेली तलवार ।।

हाय उन्हीं की छाती में से, छूरी तेरी पार हुई ।
रक्षक का भक्षण करने, तलवार तेरी तैयार हुई ।।

उनकी ही छाती पर चढ़कर, तूने मूंग दले अपने ।
जिनने तेरे लिये मोद से, रण में दिये गले अपने ।।

जहाँ पसीना गिरा कि तेरा, खून बहा डाला अपना ।
जिनके बल पर स्वर्ग लोक का, सदा तुम्हें दीखा सपना ।

उसी डाल पर वार कि जिस पर, चढ़कर फल लाखों खाए ।
उस टाठी के टूक कि जिसमें, अमृत से व्यंजन पाए ।।

जिस तागे से पतँग तनी थी, तीन लोक में उड़ी फिरी ।
उसी तागे पर अंधेपन से, है यह तेरी छुरी गिरी ।।

''पंजाब का खून'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : फूलचन्द जैन, जबलपुर ।

7—103 Dte. of Archives/91

हम

हम हिन्दू हैं तुम यवनी हो, ये थोथा ज्ञान मिटा डालो ।
हम हमवतनी हैं मुद्दत से, मिल करके देश जगा डालो ।।

हम गंगा हैं तुम जमना हो, संगम से तीरथराज बने ।
रंग न्यारे न्यारे दिखने दो, तन चीर मिलें सब काज बने ।।

हिल कोह हिमाला जाने दो, अपने एके की धारा में ।
दुश्मन को जाल बिछाने दो, अपने एके की धारा में ।।

जंगे जरमन में कूद पड़े, टर्की का नाम मिटाने को ।
भाई के सर पर टूट पड़े, इंग्लिश की शान बचाने को ।।

काबा कब्जे ने, में किया हमीं ने मालिक मुख्तार बने ।
सरे आम क़तलाम[1] मचाकर, हैं न्यायी सरकार बने ।।

लाखों की भरती भेज लाम में, जो हमने उपकार किया ।
उस के ही बदले में हम को, रोलट का उपहार दिया ।।

जिन वीरों के बल पर जर्मन, जमीं दोज़ कर दिया गया ।
बम बरछों का वार अकड़कर, उन पर ही क्यों किया गया ।।

वार लोन देकर के हमने, जिनकी भूख मिटाई थी ।
जिनकी आफत में देख जान, अपनी सन्तान कटाई थी ।।

कोमल कोमल कुसुमों से, जिनकी हम सेज बिछाते हैं ।
वे काले काले साँप हमीं पर, अपने दाँत चलाते हैं ।।

''पंजाब का खून'' शीर्षक पुस्तक से ।

प्रकाशक : फूलचन्द जैन, जबलपुर ।

(1) कत्लेआम

मेरे दिल की आज़ादी

सदियों के बाद जगे जब, देखी न गई बरबादी ।
अब कौन छीन सकता है, मेरे दिल की आज़ादी ।।

है भारत देश हमारा । हमको प्राणों से प्यारा ।
अपना सर्वस्व गँवायें । पर इसकी शान बचायें ।।

घर घर राष्ट्रीय पताका, नेताओं ने फहरादी ।
अब कौन छीन सकता है, मेरे दिल की आज़ादी ।।

सख्तियाँ सभी हम सहलें । जो कहें उसे भी सुनलें ।
चाहे जितना धमकायें । पर हम न ज़रा भय खायें ।।

वह शान्ति कभी मत छोड़ें, जो गाँधी ने सिखलादी ।
फिर कौन छीन सकता है, मेरे दिल की आज़ादी ।।

डंडों से मार भगादें । गोली हम पर बरसादें ।
मरते दम यही कहेंगें । होकर स्वाधीन रहेंगे ।।

करलें जेलों में नज़र बन्द, दे सख्त कैद या सादी ।
पर कौन छीन सकता है, मेरे दिल की आज़ादी ।।

''शान्ति का संग्राम'' शीर्षक पुस्तक से ।

संग्रहकर्ता : गिरिजाशंकर द्विवेदी

प्रकाशक : पं० शिवदयाल मिश्र, लखनऊ ।

वीर गर्जन

जब तक न मर मिटेंगे हम कुछ न कर सकेंगे ।
प्रण करलो भाई ऐसा भारत पर मर मिटेंगे ।।

चाहे गवरमेन्ट जाचे[1] या गोलियों से मारे ।
बन कर हम हिन्द सैनिक भारत पर कट मरेंगे ।।

चाहे दे जेल मुझको या फांसी पर चढ़ा दे ।
हाते[2] हुये हिन्द सैनिक सब कष्ट हम सहेंगे ।।

झेलेंगे[3] हम खुशी से सारी मुसिबतों को ।
जा[4] करना चाहे करले हम तो डट[5] रहेंगे ।।

''विजयी भारत'' शीर्षक पुस्तक से ।

लेखक : पारस नाथ द्विवेदी ।

प्रकाशक : गोपीलाल गुप्त ।

(1) जावे
(2) हँसते
(3) झेलेगें
(4) जो
(5) डटे

हिन्द करो आज़ाद

मानो गांधी जी के बात भाई अब हिन्द करो आज़ाद ।
गांजा, दारु ताड़ी, छोड़ो मत होवो बरबाद ।।

घर-घर में अब चर्खा चलावो खूब करो प्रचार ।
वस्त्र विदेशी को हाथ न छूवो मत अब हो बरबाद ।।

मैनचेस्टर लंकाशायर से तोड़ो नाता यार ।
छोड़ो विदेशी सब चीजों को, हो जावो आज़ाद ।।

बहुत दिनों तक किया गुलामी अब हम को धिक्कार ।
अब भी छोड़ो गुलामी भइया हो जावो आज़ाद ।।

''विजयी भारत वीर गर्जन'' शीर्षक पुस्तक से ।

लेखक : पारस नाथ द्विवेदी ।

प्रकाशक : गोपी लाल गुप्त ।
(1931)

स्वदेशी प्रचार

उठो-उठो खूब सो चुके हो पलट गया एकदम जमाना ।
न होगे गर होशियार अब भी पड़ेगा पछताना दुख उठाना ।।

जरा तो आंखें पसार देखो दशा है क्या देश की तुम्हारे ।
नहीं है खामोश बैठने का समय ये मानो वचन हमारे ।।

तुम्हीं हो धन मान ज्ञान गौरव प्रबृद्ध[(1)] भारत के प्राण प्यारे ।
हो कैसे उद्धार प्यार सत्कार इसका बे आप के सहारे ।।

''असहयोग तरंग'' शीर्षक पुस्तक से ।

लेखक : एक देश प्रेमी ।

प्रकाशक : पं० माधवनन्दन मिश्र, कानपुर ।

(1) प्रबुद्ध

वैष्णव कौन है ?

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड़ पराई जाणे रे ।
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ।।

सकल लोकमां सहुने बन्दे, निन्दा न करे केनी रे ।
बाच-काछ-मन निश्चल राखे, धन-धन जननी तेनी रे ।।

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे ।
जिह्वा[1] थकी असत्य न बोले, पर धम नव झाले हाथ रे ।।

मोह माया ब्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे।
रामनामशूं ताली लागीं, सकल तीरथ तेना मनमां रे ।।

वणलोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे ।
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां, कुल एकोतेर तार्या रे ।।

''राष्ट्रीय गायन'' शीर्षक पुस्तक से।

लेखक : रामदास गौड़।

प्रकाशक : महावीर प्रसाद पोद्दार, कलकत्ता।

मुद्रक : तरुलता देवी, मस्तमतवाला प्रेस, कलकत्ता।

(1) जिव्हा

वन्देमातरम्

वन्दे मातरम् !
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम् शस्यश्यामलाम् मातरम् ।

शुभ्र ज्योत्स्ना-पुलकित यामिनीम्,
फुल्ल कुसुमित-द्र मदल-शोभिनीम्,

सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम् बरदाम् मातरम् । वन्दे०

त्रिंश कोटि कंठ-कलकल निनाद-कराले,
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत स्वर करवाले,
के बले मा तुमि अबले ?

बहुबलधारिणीम् नमामि तारिणीम्,
रिपुदल-वारिणीम् मातरम् ! वन्दे०

''राष्ट्रीय गायन'' शीर्षक पुस्तक से।

लेखक : रामदास गौड़।

प्रकाशक : महावीर प्रसाद पोद्दार, कलकत्ता।

भारत-भाग्य-विधाता

जय हे !

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे, भारत-भाग्य-विधाता !

पन्जाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा, द्राविड़, उत्कल, बंग,
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा, उच्छ्वल जलधितरंग।

तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तब जय-गाथा,
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !

अहरह तव आह्वाम-प्रचारित सुनि तब उदार वाणी,
हिन्दु, बौद्ध, सिख, जैन, पारसिक, मुसलमान, ख्रस्तानी ।

पूरब पश्चिम आसे, तव सिंहासन पासे, प्रेमहार हय गाथा ।
जनगण-ऐक्य विधायक-जय हे, भारत-भाग्य-विधाता ।।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !

पतन-अभ्युदय बंधुल पंथा जुग-जुग धावित य्यात्री,
हे चिर सारथि तब रथचक्रे मुखरित पथ दिन रात्री ।

दारुण विप्लव माझे, तब शंखध्वनि बाजे,
संकट-दुःख-त्राता ।

''राष्ट्रीय गायन'' शीर्षक पुस्तक से।

लेखक : रामदास गौड़।

प्रकाशक : महावीर प्रसाद पोद्दार, कलकत्ता।

8—103 Dte. of Archives/91

जलियानवाला बाग

जलियानवाला बाग जगत् में अमर रहेगा ।
डायर-सा जल्लाद सर्वदा स्मरण रहेगा ।।

इतिहासों में ब्रिटिश-इन्दु में कारिख होगा ।
दनुज-प्रकृति का घृणा-दृष्टि से पारिख होगा ।।

इसने जो करतूत की सभी उसे हैं जानते ।
भगा हुआ यमराज का कैदी इसको मानते ।।

नेता जगत् प्रसिद्ध नहीं थे जो कर पाये ।
इसने बोये बबूर किन्तु सुरतरु हो आये ।।

विष का किया प्रयोग किन्तु विषया दे डाली ।
जिससे फैली सर्व देश में ज्योति निराली ।।

इसने ही जातीयता तीरथ की जड़ डाल दी ।
जिसने मेल-मिलाप का मंत्र दिया जयमाल दी ।।

जहां निरस्त्र जनस्थ मध्य गोलियां चलाईं ।
जब तक थी बारूद न तब तक बन्द कराईं ।।

''जलियानवाला बाग का महात्म्य'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : जगन्नाथ प्रसाद गुप्त ।

प्रकाशक : गंगा प्रसाद गुप्त, लहेरियासराय ।

मातृ-वन्दना

आवो सबै मिल के जय-मां पुकारें ।
व मां के सुयश आज जग में प्रचारें ।।

गाके सुयंश गान हिन्दू मुसलमान ।
पारसपरिक[1] भेद सारे बिसारें ।।

काबा औ काशी मिलै आज एक साथ ।
माता के मन्दिर पर दोनों ही वारें ।।

''शौकत ओ गांधी'' पुजारी बने याके।
मिल कर चलो आज आरती उतारें ।।

माल करो दूर तसबीर रख दो ।
''लोहे की जंजीर'' हाथों में डारें ।।

कर्त्तव्य पालन करो होके निर्भीक।
बेड़ी ओ फांसी से मुंह को न मोड़ें ।।

सब शक्ति सब भक्ति सब प्रेम अनुरक्ति।
तन मन धन सब इन पर आओ निसारें ।।

कहता सुयस[2] आज हिन्दू मुसलमान।
सब मिल के एक स्वर से जै मां पुकारें ।।

''सुधार की सीढ़ी'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : जगन्नाथ प्रसाद गुप्त ।

प्रकाशक : गंगा प्रसाद गुप्त, लहेरियासराय ।

(1) पारस्परिक.

(2) सुयश

शहीदों की होली

कैसे होली हाय मनायें !

नहीं भूलती हैं वह बातें, कर कर यत्न भुलायें ।
हत्पट पर अंकित चित्रों को क्यों कर शीघ्र मिटायें ।।

किस उमंग से रंग-भरी हम पिचकारियाँ चलायें ।
रंग देख उस रुधिर-वृष्टि के दृश्य दृष्टि-तर आयें ।।

किस के मलें गुलाल लाल, रोली का तिलक लगायें ।
वह भोली सूरतें दृगों में आकर झट छा जायें ।।

गाओ गाओ, क्या कहते हो । रोयें हम या गायें ।
फाग बाग़ वाला जब भूलें तब सब राग सुहायें ।।

होली की ज्वाला पर कैसे अज्ञत[1] पुष्प चढ़ायें ।
होली देख याद आती हैं वे प्रज्वलित चितायें ।।

नये नये वस्त्राभरणों से अपने अंग सजायें ।
पर हृदयान्तर-शोकानल को क्यों कर वस्त्र छिपायें ।।

षट्रस व्यंजन भांति भांति के मृदु पकवान उड़ायें ।
पर उन पीड़ित परिवारों की पूछो कष्ट कथायें ।।

उदर-भरण के अर्थ अन्न वह कठिनाई से पायें ।
हा शोकाश्रु ! पान कर रहती, हैं कितनी अबलायें ।।

जिनके आर्तनाद से पूरित, हैं पंजाब दिशायें ।
देश-हृदय भर रहा उसी से बाजे किसको भायें ।।

समवेदना प्रकट कर जी से उनका शोक बटायें ।
या होली की हर्ष-ध्वनि से उसको और बढ़ायें ।।

''स्वदेशानुराग गीतावली अथवा भरतोदय-भजनावली'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : मुरलीधर गुप्त, अलीगढ़।

(1921)

(1) अक्षत

निश्चय

तमन्ना यही सिर कटाकर रहेंगे ।
गुलामी यहां से हटाकर रहेंगे ।।

नज़ीरे हों गर पेश पेशावरों सी ।
क़दम अबतो आगे बढ़ाकर रहेंगे ।।

चलाने न अब देंगे जुल्मों की किश्ती ।
इसे बीच दरिया डुबाकर रहेंगे ।।

सितम जुल्म ढ़ाते जो बेख़ौफ़ हम पर ।
अवस उनसे बदला चुकाकर रहेंगे ।।

मिटाना हमें चाहते जो जहां से ।
निशां नाम उनका मिटाकर रहेंगे ।।

डरा सकते हमको न अब गोलियों से ।
इन्हें बीच सीने पे खाकर रहेंगे ।।

हैं भारत के हम शेर समझा हमें क्या ।
उन्हें अब तो लन्दन भगाकर रहेंगे ।।

''हृदय की आग'' शीर्षक पुस्तक से।
रचयिता एवं संकलनकर्ता : कल्याण कुमार जैन ''शशि'' ।
प्रकाशक : मंत्री-''किशोर-दल'', मुरादाबाद।
(1931)

भावना

होजायेंगे कुरबान हम हिन्दोस्तान पर

खा-पीके जिसका अन्न व जल आज बढ़े हैं ।
अब हंस के जान देंगे, सभी उसकी आन पर ।।

कट जायं गर्चे गर्दने, परवा नहीं हमें ।
पर बात आने देंगे न हम उसकी शान पर ।।

अब सुनलें वो बदकार ज़रा कान खोलकर ।
समझे हुये हैं अपने को जो आस्मान पर ।।

हम होशियार होगये सब कुछ समझ गये ।
रहने न देंगे अब तुम्हें अपने मकान पर ।।

जलियान वाले बाग से हंस कर मरेंगे हम ।
पर उफ़ ! कभी न लायेंगे अपनी जुबान पर ।।

मग़रूर है वो तेग़ तबर गन मशीन पर ।
हमको है नाज़ चरखे की तीरो कमान पर ।।

आयेगा है यक़ीन ये पहिले सा वक्त फिर ।
झंडा तिरंगा फहरेगा हिन्दोस्तान पर ।।

''हृदय की आग'' शीर्षक पुस्तक से।
रचयिता एवं संकलनकर्ता : कल्याण कुमार जैन ''शशि'' ।
प्रकाशक : मंत्री-''किशोर-दल'', मुरादाबाद ।
(1930)

जवाहिर[1] की झलक

ये शाशन[2] विदेशी मिटाना पड़ेगा ।
अब युद्ध का डंका बजाना पड़ेगा ।।

झंडा तिरंगा उठा कर के रण में ।
कदम अपना आगे बढ़ाना पड़ेगा ।।

चलावे मशीनें जो तोपों के गोले ।
तो सीना ये आगे अड़ाना पड़ेगा ।।

हवाई जहाजें जो मड़रायंगी तो ।
उठा चरखा अपना चलाना पड़ेगा ।।

तोड़ेगे निर्भय हो कानून उनके ।
भले ही अगर जेल जाना पड़ेगा ।।

लगायेंगे ''क्रान्ति की जय'' हो के नारे ।
बस भारत से इनको भगाना पड़ेगा ।।

''जवाहर की झलक'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : गंगा प्रसाद जायसवाल, इलाहाबाद।

(1930)

(1) जवाहर

(2) शासन

ऐ मादरे हिन्द

ऐ मादरे हिन्द न हो ग़मगीं दिन अच्छे आने वाले हैं ।
आज़ादी पैग़ाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं ।।

मां तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ ज़ईफ़ी में ।
मायूस न हो मग़रूरों को हम मज़ा चखाने वाले हैं ।।

बेचैन हैं हम बेवस हैं हम गो कुख कफस[1] के कैदी हैं ।
बेवस हैं लाख मगर माता हम आफत के परकाले हैं ।।

मेरी रूह को करना कैद कफ़स इमकान से इनके बाहर हैं ।
आज़ाद है अपना दिल शैदा गो लाख ज़बां पर ताले हैं ।।

यहां आये मुसाफिर बड़े बड़े मग़रूर फिर आखिर चले गये ।
ये भी चन्द रोज में परदेशी लन्दन को जाने वाले हैं ।।

''जवाहर की झलक'' शीर्षक पुस्तक से ।
प्रकाशक : गंगाप्रसाद जायसवाल, इलाहाबाद ।

(1930)

(1) कुन्जे क़फ़स

भाई बटकेश्वरदत्त व भगतसिंह का संदेश

भारत माता के दो लालों ने, मां का अपमान मिटाने को ।
दो गोले बम के फेंक दिये, सोतों को शीघ्र उठाने को ।।

फिर निर्भय होकर खड़े रहे, हो भय चिन्ता से दूर वहीं ।
सब भांति वो पूरण तत्पर थे, भू मां की शान बढ़ाने को ।।

फिर न्याय की अभिनय शाला में, अव्यक्त निश्चय ने काम दिया ।
आजन्म जेल की सज़ा करी, निज पथ से उन्हें डिगाने को ।।

वे सभ्य सुजन मां के प्यारे, जब जेलों में जाकर बैठे ।
दुर नीति भींति खड़ी देखी, सभ्वों का मान घटाने को ।।

अन्याय बड़ा ये होता है, भारत के कारागारों में ।
कुछ सभ्य असभ्य का भेद नहीं, माता का मान घटाने को ।।

वे मानी है मिट जावेंगे, मिट कर भी उन्हें मिटायेंगे ।
थे भूक ब्रत पर डटे हुये, अधिकार न्याय कुल पाने को ।।

अब समय नहीं है सोने का, उठकर युवको कुछ काम करो ।
रण भूमि में आकर डट जावो, भारत स्वाधीन कराने को ।।

सन्देश स्वदेश को है उनका, अभिमान पर अपने मर जावो ।
या रहो अभय जग में होकर, भारत का भार उठाने को ।।

''जज़बये शहीद याने काकोरी के शहीदों का पैगाम'' शीर्षक पुस्तक से ।
प्रकाशक : रामकुमार शर्मा, जबलपुर ।
(1930)

भारतीयों को चेतावनी

भारत निवासी अब तो कुछ कर्म कर दिखा दो ।
निद्रा को त्याग फौरन निज योग्यता बढ़ा दो ।।

निशि-काल ही में चोरों ने धूम घूस मचाया ।
निज आत्म बल दिखा कर उनको तो अब भगा दो ।।

यह पाक भूमि भारत नापाक हो गई हा ।
बन्धन में आ फंसी है इससे तो अब छोड़ा दो ।।

हौ सिव पुत्र तुम सब सन्देह को बिसारो ।
भारत पै मर मिटूं मैं दृढ़ता यहीं जमा दो ।।

है घोर जुल्म कारी जो शक्ति तेरे ऊपर ।
उसको तो आत्म शान्ति बल से अभी मिटा दो ।।

चरखा को भी चलाओ पंचायतें बनाओ ।
होंगे स्वतन्त्र तबहीं करके इसे दिखा दो ।।

।। मुझ को रुला के मारा ।।

बेकश को तूने डायर गोली चला के मारा ।
क्या था बिगाड़ा तुम्हारा जो उनको सता के मारा ।।

किस वास्ते ऐ जालिम मैशीनगन मँगाया ।
फायर को भी चलाया ये दिन दिखा के मारा ।।

क्या हाल मैं सुनाऊं ताकत नहीं है तन में ।
यह न्याय को समझ कर खूं को बहा के मारा ।।

विधवा हजारहों को पञ्जाब में बनाया ।
पहले तो बन चुकी थी औरो बना के मारा ।।

विधवा विलाप करतीं, पापी योरोप वासी ।
किस वास्ते पती को बाग़ी बना के मारा ।।

बालक की माता रोती ओ अत्याचारी डायर ।
हा ! लाल को भी तूने रेती लेटा के मारा ।।

शोक ! छः माश वाला बालक बागी बनाया तूने ।
उस पर दया न आई जो भाला चला के मारा ।।

बागी रहा वो बालक तो गर्भ से हो बाग़ी ।
ऐसा करो कन्हैया, मुझको रुला के मारा ।।

''वीरों का झूला'' नामक पुस्तक से ।

लेखक एवं प्रकाशक : पं० लक्ष्मन लाल जोशी, काशी ।
(1931)

एक शैदाये वतन का तराना

अल्लाह ग़र मुझे, कभी ज़ेवर का शौक़ हो ।
हाथों में हथकड़ी हो, गले में भी तौक़ हो ।।

लग़ज़िश न खाऊं जिस्म पै आफ़त हज़ार हो।
खिदमत में क़ौम की मेरा ये सर निसार हो ।।

इज़्ज़त की ख़्वाहिश दिल में न ज़िनहार हो मुझे ।
चढ़ जाऊं वतन के लिये गर दार हो मुझे ।।

धुन में वतन की हर घड़ी करता सफ़र रहूं ।
जाने के लिये जेल में सीना सिपर रहूं ।।

हाकिम की बयां लिखने से जब क़लम बन्द हो ।
इज़हार हो मेरा यही आज़ाद हिन्द हो ।।

ताक़त दे ख़ुदा हिन्द को आज़ाद करा दूं ।
या दुश्मनों के जेल को आबाद करा दूं ।।

फ़रहाद फ़ैस का मुझे दर्जा नसीब हो ।
मेरा वतन ही बस, ख़ुदा मेरा हबीब हो ।।

दुश्मन की गोलियों का हो सीने पै निशाना ।
गाता हो ''इन्द्र'' तब भी वतन का ही तराना ।।

''राष्ट्रीय गीतसागर'' शीर्षक पुस्तक से ।
प्रकाशक : आत्माराम ।
लेखक : कवि समुदाय ।
(सम्वत् 1977 वि०)

क्या तुमको कुछ लाज नहीं ?

उठहु-उठहु[1] तुम भारत वासी क्या तुमको कुछ लाज नहीं ?
दुख उठावे मातु तुम्हारी क्या तुमको कुछ ध्यान नहीं ?

आओ-आओ जल्द मिलो अब मार भगाओ शत्रु को ।
अब तुम लो तलवार हाथ में क्या तुम हो बलवान नहीं ?

भारत माता तुम्हें बुलाती तुम लुक-लुक क्यों जाते हो ?
मातु-दूध का क्या यह बदला क्या अर्जुन के खून नहीं ?

तड़प रहे हैं भारत वासी क्या तुम को कुछ ध्यान नहीं ?
है तुम्हारे हाथ नहीं या रखते तुम हो बुद्धि नहीं ?

मरना सब को एक दिना है आज मरो या कल ।
फिर क्यों न चढ़ो बलिदान मातु हित क्या तुम को उत्साह नहीं ?

''खून का आंसू'' शीर्षक पुस्तक से ।
प्रकाशक :रामचन्द्र चन्द्रदेव, गया।
(1931)

(1) उठो-उठो

बीबी मुँहजोर

घर में आई बीबी, मुँह जोर

ले आई पीहर से सँग में धूर्त अखोर-बखोर ।
चाट गये वे दौलत घर की ऐसे चतुर-चटोर ।।

खींचा धन धरती से कर के मिहनत ही का बोर ।
कमा-कमा दिन रात थक गये जो कुछ धरा बटोर ।।

चुपके से सरका देती है वह पीहर की ओर।
दिन भर चले रहे घर ही में ज्यों तेली के ढोर ।।

भूख लगी खाने को मांगा की बिनती कर जोर ।
खाली घड़ा रख दिया आगे ऐसी हृदय कठोर ।।

जो चुप रहूं बिगड़ता घर है यह संकट है घोर ।
कुछ बोलूँ तो त्योर बदलती निर्भय नाक सिकोर ।।

प्यार करूँ तो प्राणा पियेगी मारेगी सुन शोर ।
रोऊं तो सब लोक हँसेगा जाऊँ किसकी पौर ।।

बादल गरजे बिजली तड़के शीतल पवन झकोर ।
घुस बैठे बीबी के भाई घर में हमें न ठौर ।।

अब क्या करूँ नाक में दम है बीबी है मुँह जोर ।
हे भगवान इधर भी फेरो दया दृष्टि की कोर ।।

''गांधी की तोप'' शीर्षक पुस्तक से ।

सम्पादक :''लाजपत'' अलीगढ़ ।
शिवाजी प्रेस, अलीगढ़ ।

सबेरा हो गया

ऐ भाइयो! उठो अब-देखो ये क्या हुआ है।
उठने लगी है दुनिया - अब हो गया सबेरा।।

जिसमें पड़े-पड़े तुम - सुख-स्वप्न देखते थे।
वह मोह रात बीती अब हो गया सबेरा।।

भागा है मुंह छिपा कर-दासत्व का अंधेरा।
पूरब में लाली छाई अब हो गया सबेरा।।

पंछी लगे सुनाने - स्वाधीनता के गाने।
क्या ही समां बँधा है - अब हो गया सबेरा।।

तारे जो दर से ही - थे रहनुमाई करते।
वे हैं लगे खिसकने - अब हो गया सबेरा।।

झूठी चमक दिखाकर जुगनू ने नाम पाया।
है दीखता न वह भी - अब हो गया सबेरा।।

उल्लू था मानों फौजी - क़ानून से डराता।
अब कौन पूछता है - अब हो गया सबेरा।।

क्या-क्या कहूं कि कैसा - दुनियां ने रंग पलटा ।
खुद उठके देखलो तुम - अब हो गया सबेरा ।।

सत्याग्रह के जल से - मुख कालिमा को धोलो ।
लग जाओ काम में तुम अब हो गया सबेरा ।।

वह कर्म-क्षेत्र तुम को - हँस-हँस बुला रहा है ।
करना न अब किनारा - अब हो गया सबेरा ।।

''गांधी की तोप'' शीर्षक पुस्तक से।
सम्पादक : ''लाजपत'' अलीगढ़ ।

असहयोग

तबदील गवर्नमेंट की रफ़्तार न होगी ।
गर क़ौम असहयोग पर तैयार न होगी ।।

बन जायेंगे हर शहर में जलियान वाले बाग़ ।
इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी ।।

दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे ।
इन हाथों में बन्दूक या तलवार न होगी ।।

यह जेलख़ाने टूट कर अब, और बनेंगे ।
इनमें तमाम क़ौम गिरफ्तार न होगी ।।

वह कौन असीरे वतन होगा भला जिस पर ।
हँस-हँस के फिदा जेल की दीवार न होगी ।।

सौदाई हैं हम, हमको दो लोहे की बेड़ियां ।
सोने के जेवरों में यह झनकार न होगी ।।

जब तक कि, इसे खून से सीचेंगे नहीं हम ।
खेती वतन की दोस्तो गुलज़ार न होगी ।।

कुछ मिल गये हैं ऐसे मुसल्मान और हिन्दू ।
अब बस तमीजें तसबी हो जुन्नार न होगी।।

हम ऐसी हुकूमत को मिटा देंगे ''मुज़तरीब'' ।
गम में जो हमारे कभी ग़मख़्वार न होगी ।।

''किसानों की पुकार'' शीर्षक पुस्तक से।
सम्पादक : ''लाजपत'' अलीगढ़ ।
संग्रहकर्ता : रामचन्द्र, बालकिशन गुप्ता, अलीगढ़ ।
(1930)

ग़दर

हिंद के इतिहास में है आज का दिन यादगार ।
ग़दर की जब लहर चलती थी वतन के आरपार।।

जोश था हर तरफ पैदा थी देश-भक्ती की बहार ।
था हर एक हिंदी आज़ादी का—दिल से इच्छा का ।।

गूंज आती थी चलो मारो फिरंगी आज तुम ।
क़ौम के झंडे को गाड़ो ले लो तख़्त व ताज़ तुम ।।

दुख भरी आवाज़ ने वायु मंडल से यह कहा ।
ग़दर का पैग़ाम ले कर हिंद भर में फ़ैल जा ।।

हिंद के बच्चे से बूढ़े तक के कानो में सुना ।
ख़ात्मा है जुल्म का अब अन्त दुख का हो चुका ।।

इसलिए उठो प्यारो हिंद के रण-क्षेत्र-वीर ।
जाति की अवनति मिटाओ थाम लो बस धनुष-तीर ।।

बुरी हालत हिंद की और हिंदियों का हाल ज़ार ।
भूख से मरते हुए, हिंदी , क़हत का हों शिकार ।।

वो रहें बे घर मकां और हो रहे हैं भृत्य, यार[1] ।
देख के हालत मुलक की बँध गया आंसू का तार ।।

जिंदगी बलिदान की ख़ातिर हमारी, शौक़[2] से ।
थी ठनी दिल में, रिहाई हो गुलामी तौक़ से ।।

बाज़ मुल्ला दे रहे थे ग़दर के परचार का ।
थे ब्राह्मण भी बने सेवक इसी त्यौहार का।।

ग़रज़ सारों ही ने था छोड़ा काम घरबार का ।
नाक में दम कर दिया एक दम ब्रिटिश सरकार का।।

चढ़ गये फांसी पै बे शक पर ज़रा अह ! तक न की ।
हम ही हैं जिन की[3] हि ख़ातिर, जान तक की शक न की ।।

''आज़ादे हिन्द उर्फ दमन का दिवाला'' शीर्षक पुस्तक से।
लेखक एवं संग्रहकर्ता : ''इन्द्र प्रसाद गुप्त ।
प्रकाशक : प्रमोद समाज, काशी ।
(1931)

(1) भ्रष्टाचार
(2) शौक
(3) जिनकी

स्वाधीनता

स्वाधीनता से सुखद तर क्या वस्तु है इस विश्व में।
जीना न जीना तुल्य है पर—भृत्य को इस विश्व में ।।

कोई कहीं है चाहता परतन्त्र जीवन भी भला ?
है कौन ? चाहे पहिनना जो दासता की श्रृंखला ।।

स्वाधीनता के हरण का साहस करे कोई बली।
क्या मृत्यु उसके शीश पर है नृत्य करने को चली ।।

दुष्कण्टकों से पूर्ण वृक्षों के शिखर पर वास हो ।
खाने पड़े पत्ते परन्तु न दासता का त्रास हो ।।

उद्धार जब हो देश का क्या क्लेश कारागार से ।
भयभीत तब होंगे कहीं हम जेल से, तलवार से ।।

ज़ंजीर की झंकार में शुभ गीत गाते जायेंगे।
तलवार के आघात में निज जय मनाते जायेंगे ।।

स्वाधीन पूर्वज—गण रुधिर जब तक रहे इस देह में ।
तब तक सहेंगे यों न अत्याचार बैठे गेह में ।।

रहते हुए तनु-प्राण रण से मुख न मोड़ेंगे कभी ।
कर—शक्ति है नबलौं न अपने शस्त्र छोड़ेंगे कभी ।।

''महात्मा गांधी और चरखा'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : श्रीप्रसाद माहेश्वरी ।

सीखलो

आ गया है कर्म युग कुछ कर्म करना सीखलो।
देश पर अरु जाति पर हँस-हँस के मरना सीखलो।।

मारने का नाम मतलो पहले मरना सीखलो।
मिस्ले आयलैंड दबकर फिर उभड़ना सीखलो।।

पार यदि होना तुम्हें परतन्त्रता दुःख सिन्धु से।
तैर कर तो रक्त सागर से उतरना सीखलो।।

फिर जिला दोगे सकल संसार को क्षण मात्र में।
देश दुःख की आग में पड़ पहले जलना सीखलो।।

तीर्थ-यात्रा के लिये दिन रात उत्साहित रहो।
कृष्ण जन्मस्थान में निर्भय बिचरना सीखलो।।

देखना है दृश्य भारत वर्ष में यदि स्वर्ग का।
देश का तो प्राण पन से दुःख हरना सीखलो।।

''असहयोग'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : बिन्देश्वरी प्रसाद मालवीय, मिर्जापुर।

(सम्वत् 1977 वि०)

पं० कृष्णकान्त मालवीय

आखिर ख़फा हो किस के लिए इस ख़ाकसार से ।
मिट्टी में क्यों मिलाते हो दिल के गुब्बार से ।।

आहें निकल रही थीं दिले बेक़रार से ।
बैरन हुई है नींद शबे इन्तजार से ।।

वादे सबा यह कहना तू उस गुलएज़ार[(1)] से ।
फिर गुल खिलेंगे बाग में फस्ले बहार से ।।

आती हैं सुबह शामों सदा कोहसार से ।
अन्जामें इश्क पूछिये तेशे की धार से ।।

सर पीटना न पड़े न ग़मे इन्तज़ार से ।
यारब किसी का दिल न दुखा हिज्रे यार से ।।

एक तीर फिर चला निगहे होशियार से ।
बहला तू अपने दिल को फिर अपने शिकार से ।।

मरने के बाद साफ नहीं दिल गुबार से ।
दामन बचा के जाते हैं मेरे मज़ार से ।।

कुछ फायदा उठाले गमें रोज़गार से ।
हस्ती का तार अपना मिला दिल के तार से ।।

होना नहीं हेरासां[(2)] कभी अपनी हार से ।
दामन टका [(2)] हुआ है ख़िज़ाँ का बहार से ।।

''असहयोग'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : बिन्देश्वरी प्रसाद मालवीय, मिर्जापुर ।
(सम्वत् 1977 वि०)

(1) गुलेज़ार
(2) हिरासाँ
(3) टिका

देश प्रेम

भारत के नव जवानो मैदान जंग आओ ।
बन बेश[1] प्रेमी अपना जीवन सफल बनाओ ।।

वे वीर त्यागी अपना कर्तव्य कर रहे हैं।
है राह उनकी सीधी उस पर कदम बढ़ाओ ।।

है कौन शक्ति ऐसी जो तुमको रोक लेगी ।
गर एक साथ होकर बल अपना सब दिखाओ ।।

भय त्याग दो अभय बन स्वातंत्र्य जंग छेड़ो ।
चर्खे का चक्र लेकर दुश्मन को तुम भगाओ ।।

''कराची कांग्रेस उर्फ महात्मा जी की ग्यारह शर्तें'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : पं० प्रभुनारायण मिश्र, गया ।

(1931)

(1) देश

महात्माजी की 11 शर्तें

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्त अमल में लाकर दिखाना होगा ।
प्रजा के आगे तुम्हें भी साहब! सर अपना अब तो झुकाना होगा ।।

1. नशीली चीजें शराब गांजा अफीम आदिक जो बुद्धि हरती ।
मिटा के इनकी खरीद-बिक्री दूकाने सारी उठाना होगा ।।

2. हमारे सिक्के की दर को साहब! घटा बढ़ा करके लूटते हो ।
अब एक शिलिंग चार पेनी ही भाव उसका बनाना होगा ।।

३. लगान आधा करो जमीं का किसान जिससे जरा सुखी हों ।
महकमा इसका हमारी कौंसिलके ताबे तुम को रखाना होगा ।।

4. फजूल खरची बिला जरूरत जो फौज पर हो रही हमारी ।
अधिक नहीं गर तो आधा उन को जरूर साहब घटाना होगा ।।

5. बड़े बड़े भारी भारी वेतन डकारते हैं जो आला अफसर ।
उसे मुआफिक लगान आधा उससे भी कम कराना होगा ।।

6. स्वदेशी कपड़े करें तरक्की विदेशी कपड़े न आने पावें ।
विदेशी कपड़ों पै और महसूल ज्यादा तुमको लगांना होगा ।।

7. समुद्र तट का जहाजी बाणिज न हाथ में हो विदेशियों के ।
उसे हमारे महाजनों के आधीन रखकर चलाना होगा ।।

8. जिन्हें कतल या कतल इरादा सजा मिली हो उन्हें न छोड़ो ।
बकाया कैदी पुलीटिकल सब तुरन्त साहब छुड़ाना होगा ।।

9. उठा लिए जायं राजनैतिक जो मामले चल रहे मुल्क पर ।
जो इकसौ चौबिसदफा अलिफ है उसे तो बिलकुल मिटाना होगा ।।

10. अठारह का एक रेगुलेशन तथा दफा ऐसी सब उठाकर ।
हमारे भाई जो निर्वसित हैं उन्हें वतन में बुलाना होगा ।।

11. मुहकमा खुफिया पुलिस उठादो या करदो उस को प्रजा के ताबे ।
हमें भी बंदूक और पिस्तौल बराय हिफाजत दिखाना होगा ।।

''कराची कांग्रेस उर्फ महात्माजी की ग्यारह शर्तें'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : पं० प्रभुनारायण मिश्र, गया ।

वीरागण तैयार हो

भाग्य भारत का फिरेगा बीरगण[1] तैयार हो ।
रत्न गीता के पढ़े से देश का उद्धार हो ।।

तन लगा दो उस पर भाई जिस पर सब संसार है ।
विद्वान भारतवर्ष का बेड़ा लगा दो पार है ।।

हिन्दू मुसलिम दोनों भाई खादी का हर तार है ।
पुस्तक राष्ट्रीय चिनगारी का प्रभु किया तैयार है ।।

''राष्ट्रीय चिनगारी'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : पं० प्रभुनारायण मिश्र, गया ।

(1) वीरगण

वतन के वास्ते

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते ।
बुलबुले कुरवान होतीं हैं चमन के वास्ते ।।

तर्स आता है तुम्हारे हाल पै ऐ हिन्दिओ ।
गैर के मोहताज हो अपने कफन के वास्ते ।।

देखने[1] हैं आज किसको शाद है नांशाद ।
क्या तुम्हीं पैदा हुये रजो मुहिन[2] के वास्ते ।।

दर्द से बिल बिलाने का जमाना हो चुका ।
फिक्र करनी चाहिये मर्जे कुहिम[3] के वास्ते ।।

'देश भक्तों की लहर'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : पं० विश्वम्भर दयाल मिश्र ।
(1931)

(1) देखना
(2) रंजे मुहिम
(3) मर्ज़े कुहन

माताओं की वीरता

माताओं ने धरना देकर क्या रंग खिलाया दुनियां में ।
जो मर्द नहीं कर सकते थे वह कर दिखलाया दुनियां में ।।

गान्धी का हुक्म बजाया है धरना देना मन भाया है ।
परदे को तोड़ा है काम किया क्या नाम कमाया दुनियां में ।।

वस्त्र विदेशी व्यवसाई जिनको न शरम अब तक आई ।
माता बहिनें कर ले चूड़ी क्यों नाम धराया दुनियां में ।।

कहती हैं बाबू लोगों से हरगिज न बचोगे ढोंगों से ।
चूड़ी साड़ी पहिनों बाबू क्यों नाम धराया दुनियां में ।।

यू० पी० की कुछ माताओं ने कुछ उनकी नेकसलाहों ने ।
जत्थाले नमक बना करके है जोश दिलाया दुनियां में ।।

विश्वम्भर हाल सुनाता है कहने से नहीं घबड़ाता है ।
नारीकर में झण्डा लेकर हिलमिल फहराया दुनियां में ।।

''देश भक्तों की लहर'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता एवम् प्रकाशक : पं० विश्वम्भर दयाल मिश्र, इटावा ।
(1931)

चेतावनी

यारो वतन का जिस दम तुमको ख्याल होगा ।
फिर दुश्मनों से अपना बांका न बाल होगा ।।

देश की कसम खा लें सब रोजगार वाले।
फिर देखना हमारा घर माला माल होगा ।।

भर गर जहाज गल्ला जांयें न गैर जां को ।
फिर देश में हमारे किस तोर काल होगा ।।

घी दूध खूब होगा गउंओं की परिबरिश से ।
फिर किस तरह किसी का चेहरा निढाल होगा ।।

पीटेंगें पेट अपना इंगलैण्ड के जुलाहे ।
कपड़ा बनाने में जब हासिल कमाल होगा ।।

''देश भक्तों की लहर'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता एवम् प्रकाशक : पं० विश्वम्भर दयाल मिश्र, इटावा ।
(1931)

पहिनों केसरिया बाना

बढ़े चलो हे भारत वीरो, ऋषियों की प्यारी सन्तान ।
स्वतंत्रता के महा समर में,हो जाओ सहर्ष बलिदान ।।

धर्म युद्ध में मरना भी है, अमर स्वर्ग पद का वाना ।
रण भेरी बज चुकी वीरवर, पहिनों केशरिया[(1)] बाना ।।

माता के सच्चे पूतों की, आज कसौटी होना है ।
देखें कौन उतरता पीतल, कौन उतरता सोना है ।।

उतरेगा जो आज समर में, वही शूर है मरदाना ।
रण भेरी बज चुकी वीर वर, पहिनों केशरिया बाना ।।

अब मदांध शासन उलटा दो, शक्ति शान्तिमय वारों से ।
अन्यायी अरि को दहला दो, अपने प्रबल प्रहारों से ।।

स्वतंत्रता की विजय पताका, ऊंची फहराते जाना ।
रण भेरी बज चुकी बीर वर, पहिनो केशरिया बाना ।।

बिना आत्म बलिदानों के, कब किसने स्वतन्त्रता पाई ।
लाखों भेंट हुये माता के, चरणों में तब वह आई ।।

आज हमें भी दुनियाँ को, अपना पोरुष है दिखलाना ।
रण भेरी बज चुकी वीरवर, पहिनों केशरिया बाना ।।

साठ बरस के गांधी जी भी, कारागार भुगतते हैं ।
शोक ! नव युवक जेलों में, जाने से जी में डरते हैं ।।

श्रम विडंवनामय[2] जीवन से, तो अच्छा है मर जाना ।
रण भेरी बज चुकी वीर वर, पहिनों केशरिया बाना ।।

''देश भक्तों की लहर'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता व प्रकाशक : पं० विश्वम्भर दयाल मिश्र ।

(1) केसरिया
(2) इस विडंबनामय

वीरों का पैगाम

देश की खातिर खुशी से हम स्वाह हो जाऐंगे ।
यह दाग मात्र भूमि का हम जीते जी धोजाऐंगे ।।

परवाह नहीं तीरे तवर बन्दूक गोली तोप की ।
गर धर्म के मैदान में हम गोली खा सो जाऐंगे ।।

स्वतन्त्र देवी की निसानी जेल है हमें खेल घर ।
हाथों की शोभा हथकड़ी हम पहन कर गो जाऐंगे ।।

शोभाग्य का वह रोज जिस दिन होवेंगे कुर्बान हम ।
इकबार तो दुश्मन भी लाशें देख कर रो जाऐंगे ।।

अब डटगये मैदान में झंडा स्वतंत्र गाड़ के ।
या तो होगये पार वरना मरके खतम हो जाऐंगे ।।

''गांधी का सुदर्शन चक्र'' शीर्षक पुस्तक से ।
सम्पादक : मोहरचन्द्र मस्त, गुड़गांव ।

12—103 Dte. of Archives/91

भारत कंगाल किसने किया

एक आन विदेशी कपड़े ने भारत कंगाल बनाया है।
नये-नये रूप में आकर के भारत का कार थकाया है।।

रेशम व कीनखाप मखमल कइ तरह के लठ्ठे व मलमल।
नर्मा ने खूब करी खलबल जर ठगने जाल रचाया है।।

पापलैन पर्मटा अटालीन कश्मीरे ज़फर व टूयल जीन।
शाटन अल्पाके मारकीन ने अपना मज़ा चखाया है।।

बुकर्म फीते व सुनो बेल जो हर कपड़े में देवें पेल।
समझो तो भारत लिये सेल जैसा हथियार चलाया है।।

चर्बी की पान लगाते हैं हर कौम का धर्म घटाते हैं।
पैसे ठग-ठग कर खाते हैं ऐसा यह प्रेम बढ़ाया है।।

पतले कपड़ों की सुनो दमक ढकने पर भी रहा जिस्म चमक।
लंकशायर की देख गमक इज्जत व धर्म घटाया है।।

अब भी चेतो ऐ नारी नर रोजगार चलावो रखो ना डर।
मत खरीद करो विदेशी वस्त्र कितनी बारी समझाया है।।

चर्खे की तोप चला दीजे-लंकाशायर तब सर कीजे।
मैनजेस्टर[1] किलाजीत लीजे मोहर ने हुकम लगाया है।।

''गांधी का सुदर्शन चक्र'' शीर्षक पुस्तक से।
सम्पादक : मोहरचन्द्र मस्त, गुड़गांव।

(1) मानचेस्टर

विलायती कपड़ा निषेद[1]

हमरे भारत के मालोजर को वो लंका शायर उड़ा रहा है।
पिन्हा के कपड़े हमैं विदेशी धर्म हमारा गंवा रहा है।।

कटा कर सूअर व गाय का खूं मिला के कपड़े बनाए उसने।
कलफ मैं चर्बी जहर मिला कर अशुद्ध कपड़े पिन्हा रहा है।।

लिखा है उसकी किताब में यह न इस मैं शक है ज़रा किसी को।
ऐच-वेनिस्ट थ्योरी व आफ वाइजिंग छपाके पुस्तक जता रहा है।।

लिखा है पन्ने व सात नौ में व ग्यारह तेरह पलट कर देखो।
कोर वाल और यून साहब की लिखी किताबों में पा रहा है।।

अगर है कपड़ा जो एक सौ मन तो तीस मन खूं लगाया उसमें।
मिला के शुअर व गाय का खूं क्या रंग पक्का चढ़ा रहा है।।

छपी यह पुस्तक बाइस सन में सुरू का महिना जो जनवरी था।
मिलेगी पुस्तक कहां से तुमको पता हुकमसिंह बता रहा है।।

मानचैस्टर इम्पोरट कम्पनी नम्बर ६५ मकान उसका।
किन्ग इस्ट्रीट खास लन्दन मैं मिलेगी पुस्तक सुना रहा है।।

''गांधी का सुदर्शन चक्र'' शीर्षक पुस्तक से।

सम्पादक : मोहरचन्द्र मस्त, गुड़गांव।

(1) निषेध।

वीर की संतान

हम वीर की सन्तान हैं हैं वीर बनने के लिये

हम सिंह सुवन सपूत हैं देश कानन राज हैं।
ये भव्य भारत ही हमारा स्वर्ग का सुरराज है।।

इन गीदड़ों के झुण्ड से हम मित्र डरने के नहीं।
तैयार हैं सुरराज से भी आज लड़ने को कहीं।।

अभिमन्यु का अनुराग है प्रह्लाद की हरभक्त है।
भगवान को ध्रुव बन बुलाने की हमीं में शक्ति है।।

सुन्दर देशोद्धान[1] के हम कंज कुंज सुवास हैं।
इस प्राण प्यारे देश के हम दास शुभ आस हैं।।

''भगवान गांधी अथवा स्वतंत्र भारत का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : भगवान गांधी कार्यालय, लखनऊ।

(1) देशोद्यान

कल्पना

खुशी के दौर-दौरे से है यां रंजो मुहन पहले।
बहार आती है पीछे है खिजां गिरदे चमन पहले।।

मुहब्याने वतन होंगे हजारों पे वतन पहले।
फलेगा हिन्द पीछे और भरेगा ऍडमन पहले।।

अभी मीरामका[1] क्या जिक्र यह पहली ही मंजिल है।
हजारों मंजिलें करनी हैं तै हमको कठिन पहिले।।

मुनब्बर अंजमन होती है महफिल गर्म होती है।
मगर जब कि खुद जलती है शमए अंजमन पहले।।

जमीने हिन्द भी फूले-फलेगी एक दिन लेकिन।
मिलेंगे खाक में लेकिन हमारे गुलबदन पहले।।

न हो कुछ खौफ मरने का न हो कुछ फिक्र जीने की।
अगर ऐ हमदमों मन में लगी हो एक लगन पहले।।

उन्हीं के सर रहा सेहरा उन्हीं पर ताज कुर्बानी।
जिन्होंने फाड़कर कपड़े रखे सर पर कफन पहले।।

हमारा इंडिया योरुप से भी ले जायगा सबकत।
जो गांधी से मुहब्बाने वतन हों इंडियन पहले।।

न राहत की करैं परवा न हम दौलत के तालिब हों।
करैं सब मुल्क पर कुर्बान तन-मन और धन पहले।।

तिलक महाराज की जय हो उन्होंने यह दिखलाया था।
कि शुभ कर्मों में होते हैं हमेशा बिरहमन पहले।।

हमें दुख भोगना लेकिन हमारी नस्ल सुख पाये।
ये दिल में ठान लें अपने यहां के मर्दजन पहले।।

मुसीबत या कयामत आ कहां जंजीर जिन्दा हैं।
यहां तय्यार बैठे हैं गरीबाने वतन पहले।।

''भगवान गांधी अथवा स्वतन्त्र भारत का बिगुल '' शीर्षक पुस्तक से।
सम्पादक : ''भगवान गांधी'', लखनऊ ।
संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : ठा० मुन्शी सिंह जी।
(1930)

(1) आराम

हम तो स्वराज लेंगे

भारत के कोने-कोने युवकों के हर दिलों से ।
निकलती यही सदा है, हम तो स्वराज लेंगे।।

हमको तो कैद कर लो सीकंड़ से बांध डालो ।
पर हम यही कहैंगे, हम तो स्वराज लेंगे।।

तुम मार काट डालो, धड़को अलग करो पर ।
सर तो यही कहेगा, हम तो स्वराज लेंगे।।

सर को तो तोड़ डालो, रसना को काट डालो
पर स्वांस यह कहैगी, हम तो स्वराज लेंगे।।

स्वांसा निकाल डालो, कफ्फन भी ढाक डालो ।
पर लाश कह उठैगी, हम तो स्वराज लेंगे।।

लाशों को गाड़ डालो, उसको जलाय डालो ।
पर हड्डियां कहैंगी, हम तो स्वराज लेंगे।।

हड्डी को तोड़ डालो, चक्की में पीस डालो ।
भुर्रा यही कहैंगा, हम तो स्वराज लेंगे।।

भुर्रा अकाश फेको, पातालहू में गाड़ो ।
वायू से भी कहैगा हम तो स्वराज लेंगे।।

मन्दिर में जाके देखो, हर मूर्ती से पूछो ।
मसज़िद में भी सुनोगे, हम तो स्वराज लेंगे।।

जुगों से मांगता था, हाथों को जोड़ता था ।
पर अब न हम कहेंगे, हम तो स्वराज लेंगे।।

गांधी-सी हम करैंगे, शौकत की हम सुनैंगे ।
आज़ाद होय करके हम तो स्वराज लेंगे।।

रामचन्द्र की करैंगे किचलूं को आदरैंगे ।
चितरंजनहूं सि करके हम तो स्वराज लेंगे।।

तुम को न चीज़ देंगे, तुमसे न चीज़ लेंगे ।
गुलामी न अब करैंगे हम तो स्वराज लेंगे।।

तनजेब छोड़ देंगे, मलमल भी त्याग देंगे ।
गाढ़ा को पहन कर हम तो स्वराज लेंगे।।

कपास भी बुवेंगे, सब से यही कहैंगे ।।
चर्खा को कात करके हंम तो स्वराज लेंगे।।

चर्खा से सूत होगा, करघा से हम बुनैंगे ।।
अरु प्रेम से पहन कर हम तो स्वराज लेंगे।।

स्कूल छोड़ देंगे, राष्ट्रीय में पढैंगे ।।
अदालत को त्याग देंगे हम तो स्वराज लेंगे।।

हम शान्ति से रहैंगे, कुछ भी नहीं कहैंगे ।।
असहयोग को करैंगे हम तो स्वराज लेंगे।।

होवैं हज़ार टुकड़े, इस देह के हे मित्रो!
पर तुम न टेक छोड़ो हम तो स्वराज लेंगे।।

बातें कहीं हैं जितनी, प्रिय मान लो तुं उतनी ।
असहयोग कर दो प्यारे हम तो स्वराज लेंगे।।

''गांधी--प्रताप'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : जगन्नाथ पाण्डेय, बनारस।

देश दशा

ऐ हिन्द-सपूतो देश दुलारो जन्म भूमि का ध्यान धरो ।
टुक आलस निद्रा त्याग दशा पर अपने तनिक विचार करो ।।

तुम बैठे उन्नति शिखर एक दिन जग का शासन करते थे ।
था जगद्गुरु का गौरव तुमको तुम्हें सभी अनुसरते थे ।।

हो सर्व विभव सम्पन्न चैन की बंशी सदा बजाते थे ।
गा ज्ञान राग संचार ज्ञान का करके सुयश कमाते थे ।।

पर आज पतन के गड्ढे में तुम पड़े नींद से सोते हो ।
पड़े दासता बन्धन में तुम आर्य जाति पद खोते हो ।।

जो विद्या के भण्डार कभी थे सर्व श्रेष्ठ कहलाते थे ।
हो सौ में पांच पढ़े कुछ-कुछ जो चौदह इल्म पढ़ाते थे ।।

अब पशुओं-सा विद्या विहीन हो खेत जोतते बोते हो ।
लद सब विदेशों जाता है तुम सत्तू खाके सोते हो ।।

सब कौशल कला लुटा पच्चासी सौ में खेती करते हो ।
तिस पर भी सोलह करोड़ नित आध पेट खा मरते हो ।।

सतहत्तर दिन का साल में खाना इंग्लैंड स्वयं कमाता है ।
दुर्भिक्ष आदि का नाम तलक पर सुना नहीं वहां जाता है ।।

पचासी मन हम साल में प्रतिजन गल्ला पैदा करते हैं ।
पर तौ भी चार करोड़ हमारे भाई भूखों मरते हैं ।।

बीस इंच ज़ल कृषि के लिये साल में होना काफी है ।
जिस देश में इतना होता है उस देश में खाना काफी है ।।

पैंतीस इंच जल वर्षा में औसत हिन्दुस्तान में गिरता है ।
दुर्भिक्ष बजाता डंका तौ भी हम में निशि दिन फिरता है ।।

नौ रुपये प्रतिजन कृषक तुम्हारी औसत साल कमाई है ।
बस इतने ही में खान-पान जो दान तुम्हारी आई है ।।

हर साल विदेशी पांच कोटि मन गल्ला तुम से लेते हैं ।
दुर्भिक्ष प्लेग हैज़ा ज्वर आदि तुम्हें बदले में देते हैं ।।

जब राज तुम्हारा था तब प्रतिजन बीस गाय तुम रखते थे ।
तब मोटे-चंगे रहते थे नित माखन-मिश्री चखते थे ।।

अब पन्द्रह जन पै एक गाय या भैंस लोग बतलाते हैं ।
तिस पर हर साल विदेशी लाखों ढो ले जाते हैं ।।

जो तुम में हैं सरकारी नौकर उनकी दशा निराली है ।
हैं निरे किराये के टट्टू कस लदे उदर तक खाली हैं ।।

जो गिनती के गोरे नौकर हैं तीस कोटि अपनाते हैं ।
पर लदुए हिन्दुस्तानी भाई सात कोटि ही पाते हैं ।।

व्यौपार तुम्हारा एक दिन था पृथ्वी में सब से बढ़ा हुआ ।
यूनान, मिश्र, ईरान, रोम में हिन्दी झण्डा गड़ा हुआ ।।

पर विदेशियों ने आकर सारा, उसको सत्यानाश किया ।
कूट नीति छल कपट आदि से उसका सत्यानाश किया ।।

या निर्धन, निर्बल प्लेग तथा महँगी ने डेरा डाल दिया ।
हा ! कहूं कहां तक हृदय विदारक भारत का जो हाल किया ।।

हर साल यहां दस लाख विचारे अन्न न पाकर मरते हैं ।
पच्चासी लाख अलावा इसके मौत का कर्जा भरते हैं ।।

हैं भिक्षुक छप्पन लाख यहां अतिरिक्त साधु पाखण्डीं के ।
हैं चार लाख पच्चासी सौ घर भारतवर्ष में रण्डी के ।।

दो करोड़ पचहत्तर लाख हैं विधवा आह सदा भरती ।
एक कोटि हैं बाल पत्तियां हाय !हाय ! भारत धरती ।।

पिछली सदी में बावन लाख जगत में कटे लड़ाई में ।
पर ढाई कोटि गिरे हिन्दी महंगी की केवल खाईं में ।।

तुम नब्बे कोटि नशे में रुपया हर एक साल गंवाते हो ।
पचास लाख मन सुरती बारह मास में तुम खा जाते हो ।।

डेढ़ अरब का माल साल में हिन्द विदेश पठाता है ।
हर साल पचीस करोड़ सलामी इंग्लैण्ड हम से पाता है ।।

अब बासठ कोटि सेना विभाग में खर्चा हम से लेते हैं ।
सत्ताइस कोटि हम रेल में खर्चा आहें भर कर देते हैं ।।

सन् 17 तक इंग्लैण्ड ने हम से जितना रुपया पाया है ।
एक सौ अस्सी अरब तखमीनन् एक गोरे ने बतलाया है ।।

साठि कोटि का भारत में अंगरेजी कपड़ा आता है ।
था यों समझो कि रक्त तुम्हारा इतने का वहां जाता है ।।

इस ब्रिटिश राज्य का जन बिल्कुल ग्यारह कोटि बताया है।
तिसमें साढ़े नौ करोड़ भारत को हिस्सा आया है।।

इस ब्रिटिश राज्य में जो-जो दुर्गति प्यारो! हुई तुम्हारी है।
क्रम बद्ध करने में इसको कंपती क़लम बेचारी है।।

दासत्व बन्ध को तोड़ अगर तुम सुख की इच्छा करते हो।
इन्सां होने की जग में कुछ भी हिन्दी जो दम भरते हो।।

यदि कुछ भी अपने धर्म कर्म की रक्षा तुमको करना है।
यदि स्वाभिमान को रखना है मर्य्यादा पर यदि मरना है।।

तो गांधी जी जो कहते हैं उसका करना मन में ठानो।
उद्धार इन्हीं से भारत का होगा यह निश्चय जानो।।

पढ़ असहयोग का मन्त्र तनिक वादी पर अपने छू कर दो।
इस साल स्वराज्य मिलेगा तुमको मग मन्त्र पढ़ फू कर दो।।

''गांधी --प्रताप'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक: जगन्नाथ पाण्डेय, बनारस।

असहयोगियों की खुदा से पुकार

दिलवा दे प्रभू अब तो हमें देश हमारा ।
इन सबको मारने का है औतार तुम्हारा ।।

हिरण कश्यप बड़ा ही दुष्ट था उस को भी संहारा ।
दुख जाल से प्रहलाद को आपी ने उबारा ।।

अन्याय बहुत करता था रावण वो हत्यारा ।
निज बाण क़ातिलों से उसे भी तो है मारा ।।

विभीषण को दिया राज्य बजा धर्म नक्कारा ।
दुष्टों को कर बरबाद देश अपना सुधारा ।।

लूटे है जिसने हिन्द के सारे ही सितारा ।
इस देश में मनहूश क़दम आये न सारा ।।

तोपों से गनमसीनों से हमें जेर कर डारा ।
वे खता लीडरों पै है वारंट निकारा ।।

सहते हैं सभी वारों को पग पीछे न टारा ।
सुन करके विनय मेरी कुछ दो तो सहारा ।।

''राष्ट्रीय होली'' शीर्षक पुस्तक से ।
लेखक : पं० वेणीमाधव शर्मा पन्त वैद्य, इलाहाबाद ।
(1922)

गर्वन्मेन्ट के ताड़न को

श्रीराम के हाथ धनुषधारी ।
श्री कृष्ण के हाथ सुर्दशन था ।।

श्री गांधी के हाथ में चर्खा है ।
भारत के उद्धार करन को ।।

श्री राम के साथ लक्ष्मण थे ।
श्री कृष्ण के साथ बलदाऊ थे ।।

श्री गांधी के साथ जवाहर हैं ।
भारत के आज़ाद करन को ।।

श्री राम ने मारा रावण को ।
श्री कृष्ण ने मारा कंसां[1] को ।।

श्री गांधी ने अवतार लिया ।
गर्वन्मेन्ट के ताड़न को ।।

''गांधी—गीतान्जलि'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता : प्रभात कुमार विद्यार्थी ।
प्रकाशक : पन्नालाल शर्मा, खुर्जा ।

(1930)

(1) कंस

स्वतंत्र होकर

आधीन होकर बुरा है जीना, है मरना अच्छा स्वतंत्र होकर ।
सरल को तजकर गरल से प्याला है भरना अच्छा स्वतंत्र होकर ।।

पड़ी हो हाथों में हथकड़ी यदि, तो स्वर्ग सुख से लाभ क्या है ।
नरक के कुंड में निवास निसदिन है करना अच्छा स्वतंत्र होकर ।।

जो दास होकर मिले भवन में सुस्वाद भोजन तो तुच्छ है वो ।
सदैव उपवास करके बन बन, विचरना अच्छा स्वतंत्र होकर ।।

मिलै उपाधी या मान पदवी, जो सेवा करके तो व्यर्थ है सब ।
घृणा व अपमान के गढ़े में उतरना अच्छा स्वतंत्र होकर ।।

''गांधी गीतान्जलि'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता : प्रभात कुमार विद्यार्थी ।
प्रकाशक : पन्नालाल शर्मा, खुर्जा ।

शान रख लो

अरे वतन वालो वतन की, शान रखलो ।
बुजुर्गों की पुरानी आन रखलो ।।

किसी की जान को मत लो कभी तुम ।
हथेली पर बस अपनी जान रखलो ।।

खबर मक़तल में कादो क़ातिलों को ।
अपने खंजरों पर शान रखलो ।।

नहीं है अब इन में पानी ।
यह तैगें म्यान के दरिम्यान रख लो ।।

फिरेगें दर वदर वह कहते एक दिन ।
कि टुकड़ों पर कोई दरवान रखलो ।।

मुसाफ़िर शोक से कहदो यह उनसे ।
कि हमें भी जेल के महमान रखलो ।।

''गांधी गीतान्जलि'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता : प्रभात कुमार विद्यार्थी ।
प्रकाशक : पन्नालाल शर्मा, खुर्जा ।

धरसाना को चलो

चलो वीरो धरसाना को, साज लो अपनी सैना को

सात वर्ष के बाद फिर, आया पर्व अमोल ।
घर २ से निकलो चलो, भारत की जय बोल ।।
न डरना गोले गोली को ।। साज०

वही लगन नेता वही, वही ब्रिटिश सरकार ।
फिर क्यों बैठे साधि चुप, वीरो हिम्मत हार ।।
लगा लो चन्दन रोली को ।। साज०

आती हो उस ओर से, छर्रों की बौछार ।
इधर मची हो प्रेम से, जय जय कार पुकार ।।
मिटा दो ब्रिटिश ठठोली को ।। साज०

घर घर में होवे ध्वनित, भव्य भाव भरपूर ।
ब्रिटिश-गर्व सत्याग्रही, कर दें चकना चूर ।।
जला दें जलता होली को ।। साज०

''रण--भेरी'' शीर्षक पुस्तक से ।
प्रकाशक : उमा शंकर दीक्षित, इलाहाबद ।

नई उमंगें

हुआ है जंगे आज़ादी का फिर एलान भारत में ।
किसी ने डाल दी है जान फिर बेजान भारत में ।।

ये तफरीकें ये तहरीसें ये तहरीके गुलामी की ।
कोई दमकी नज़र आती है अब मेहमान भारत में ।।

असर खूने शहीदे ''लाजपत'' का है कि दो बारह ।
बहारे जांफिजा आने को है वीरान भारत में ।।

रहें हिन्दू मुसल्मां मुत्तहिद व मुत्तफिक हो कर ।
न बरगश्ता रहे इंसान से इंसान भारत में ।।

''राष्ट्रीय गान'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता : राष्ट्रीय पुस्तक भंडार, अवोहर ।

राष्ट्रीय सन्देश

चलो भाइयों उठो ! आज माता ने हमें बुलाया है ।
कर्मवीर गांधी के द्वारा यह सन्देश पठाया है ।।

उठा कर रख दो पुस्तक वीर ।
गुलामी की तोड़ो जंजीर ।।

न हो भारत जब तक स्वाधीन ।
न लो विश्राम न हो श्रम हीन ।।

हो जाओ कुर्बान देशपर यही मन्त्र सिखलाया है ।।

करो अब रक्तसिन्ध को पार ।
सहो सब गन मशीन की मार ।

दिखादो निज स्वदेश का प्यार ।
मिटा दो अन्यायी सरकार ।।

हो जाओ तय्यार जेल को यही समय अब आया है ।।

''बस-चल बसे'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता : पं० लक्ष्मीशंकर शर्मा ।

(1922)

घबड़ाना नहीं

देश के हित जान जाती हो तो घबड़ाना नहीं ।
धन चाहे सब जा रहा हो किन्तु पछताना नहीं ।।

सीखलो उपदेश राणा अरु शिवाजी वीर के ।
हिन्द के हित में मरे वह नियत बिसराना नहीं ।।

मातृ भूमी[1] के लिए तन मन व धन अपर्ण करो ।
कोटि आपत्ती घिरें तुम तनिक भय खाना नहीं ।।

जिसने अपने देश हित सर्वस्त्र अर्पण कर दिया ।
स्वर्ग है तैय्यार उनको नर्क में जाना नहीं ।।

बाल बच्चों को सिखाओ देश भक्ति बीरता ।
क्रूरत परतन्त्रता इत्यादिता बतलाना नहीं ।।

देश के प्यारे सपूतो हिन्द के तुम लाल हो ।
हिन्द माता के दुलारे नाम धरवाना नहीं ।।

अब उठो निज शक्तिसे कर्तव्य पथ में पग धरो ।
है परीक्षा यह तुम्हारी आज अलसाना नहीं ।।

कहता है जगदीश मित्रों मत डरो शुभ कार्य में ।
समझदारों के लिए कुछ अधिक समझाना नहीं ।।

''असहयोगी बीर भारत'' शीर्षक पुस्तक से ।
संग्रहकर्ता : सुरेन्द्र शर्मा ।
प्रकाशक : चुन्नीलाल गौड़ ।

(1) मातृभूमि

प्रोत्साहन

आओ भाई हिल-मिल करके होवें माता पर बलिदान ।
लेश मात्र संकोच न होवे अर्पण कीजे तन धन प्राण ।।

बज्रपात हो चाहे विद्युत ताड़ित करे आपना आवेश ।
ताड़िक हों या किसी भांति से लावें दुःख न उर में लेश ।।

दशों दिशा पूरित आंधी से यदि हो मार्ग कंटकाकीर्ण ।
चिन्तित हों न कभी बन निश्चल क्षेत्र करें अपना बिस्तीर्ण ।।

तोडेंगे सम्बन्ध आपसे मोड़ेंगे मुख सब दुख भोग ।
बतलाओ यह शासक गण को नहीं करेंगे अब असहयोग ।।

बहुत दिनों दिखलाई हमने रक्षक के अपनी प्रतिभक्ति ।
रक्षक ही यदि भक्षक हो तो नहीं सहन करने की शक्ति ।।

लेंगे पूर्ण स्वराज्य देश के मिल कर गावें गति सहर्ष ।
गूंजित होगी यही प्रतिध्वनि जय-जय-जय-जय भारतवर्ष ।।

''असहयोगी वीर भारत'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : सुरेन्द्र शर्मा ।

प्रकाशक : चुन्नीलाल गौड़ ।

स्वराज्य लेंगे

हम अब विचार अपना, हर्गिज[1] नहीं तजेंगे।
चाहे प्राण तन से निकले, लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

गोली भी गर चलेगी तो भी नहीं डरेंगे ।
सर्वस्व त्याग कर के स्वराज्य लेंगे ।।

हमने ये प्रण किया है, संदेह तज दिया है ।
गर जान जाय तो भी लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

संसार देखता है अन्याय हम पै होते ।
कैदी बनेंगे पर हम लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

हमको है गांधी का अरु ईश का भरोसा ।
सब दुख सहेंगे पर हम लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

मस्जिद हो या मंदिर, हिन्दू हो या मुसलमां ।
सब लोग एक हो कर लेंगे स्वराज्य लेंगे।।

जगदीश ! तब शपथ है निश्चय ये कर चुके हैं ।
गर मिटेंगे तो भी लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

जितना बने सता लो, जी भर के जुल्म कर लो ।
हम कुछ न बोलेंगे पर लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

तुम क्यों हमें डराते अपने मशीन गन से ।
हर्गिज़ न हम डरेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

''कल्लू'' की ये विनय है बिल्कुल न खौफ खाना,
कह दो कड़क के हम तो लेंगे स्वराज्य लेंगे ।।

''नौकर-शाही की तबाही'' शीर्षक पुस्तक से ।

संग्रहकर्ता : श्याम बिहारी श्रीवास्तव, कालिका मिश्र, लछमन प्रसाद गुप्त ।

प्रकाशक : राष्ट्रीय सदन पुस्तकालय, इलाहाबाद ।
(सम्वत् 1978 वि०)

(1) हरगिज

ज़माने की चाल

संसार जानता है हमको नहीं बताना ।
हम बे कसों ने देखा सुन लो सभी ज़माना ।।

तेमूर लंग को भी देखा था हमने कूवत ।
औरंगजेब का भी देखा था आबो दाना ।।

वह दृश्य नादिरी का आंखों में फिर रहा है ।
देखा था चापलूसों का मालोज़र कमाना ।।

तुग़लक के पीतलों का सिक्का था हमने देखा ।
जंगल में घेर कर के रैय्यत का खूं बहाना ।।

ओडायरी भी देखी जीवन-निसार करके ।
डायर ने जानवर से भी तुच्छ हमको जाना ।।

जलियान बाग़ की वो हत्या थी हमने देखी ।
देखा था कायरों का शेरो बबर कहाना ।।

देखी प्रताप गढ़ की अन्याय पूर्ण घटना ।
प्यारे कृषक गणों पर हां गोलियां चलाना ।।

कागद[1] के सिक्के उड़ते अब तो हरेक घर में ।
सोने व चांदी का अब बिल्कुल नहीं ठिकाना ।।

भगवन तिलक ! फंसी है मँझधार मध्य नैय्या ।
केवल इसे दया कर के पार तुम लगाना ।।

देखे हैं हमने प्रभुवर ! लाखों दुखांत नाटक ।
दुख-दृश्य इससे ज़्यादा हमको न अब दिखाना ।।

''नौकर शाही की तबाही'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : श्याम बिहारी श्रीवास्तव, कालिका मिश्र, लछमन प्रसाद गुप्त ।

प्रकाशक : राष्ट्रीय सदन पुस्तकालय, इलाहाबाद ।

(सम्वत् 1978 वि०)

(1) कागज़

15—103 Dte. of Archives/91

हरगिज न डरना चाहिए

देश उन्नति के लिए, हरगिज न डरना चाहिए ।
जान आये काम तो, नाहीं न करना चाहिए ।।

ऐ ! नौ जवानो सोचने का वक्त अब बाकी नहीं ।
काम अच्छे पर क़दम[1] आगे ही धरना चाहिए ।।

पूर्वजों का नाम बाकी अब भी है इस देश में ।
नाम उनके में कभी, धब्बा न लगना चाहिए ।।

रक्त गर जारी रगों में, आपकी है मित्रवर ।
हक्क अपने के लिए लड़ना चाहिए ।।

''भारत माता की पुकार'' शीर्षक पुस्तक से।

लेखक : पं० लक्ष्मीचन्द्र जी श्रोत्रिय ।

प्रकाशक : पं० रामनाथ त्रिवेदी, मऊ रानीहुर (झांसी) ।

(सम्वत् 1987 वि०)

(1) कदम्

दिल में ठानी है

अरे वो दुष्ट यमदूतो हमें तुम क्यों सताते हो ।
हमारे लाल को लेकर वृथा अब क्यों रुलाते हो ।।

समझ मन में अरे पापी-पिशाची खून के प्यासे ।
हमें दिखला सुधा प्याला हलाहल तुम पिलाते हो ।।

मिलेगा फल तुम्हें इसका लुटेरे भूतके चेरे ।
चूभेंगे शूल से कण्टक तुम्हीं को जो लगाते हो ।।

शरम कुछ भी नहीं तुमको अरे वो अक्ल के दुश्मन ।
चढ़ाता जो निरन्तर है उसी को तुम गिराते हो ।।

''सुखदेव भगतसिंह और राजगुरू की फांसी'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : पं० शम्भू प्रसाद मिश्र ।

सत्य का महत्व

सदा जो वीर सच कहता वही बस नाम पाता है।
बड़े आनन्द से संसार सागर पार जाता है।।

जो कंपता इससे कायर है नहीं है मनुजता उसमें।
नहीं स्वधीनता उसमें उसे दासत्व भाता है।।

नहीं परवा करो कुछ भी किसी की बस कहो सच ही।
उसे आपत्तियों से भी न जो कोई दिखाता है।।

सुना दो बस कड़क करके तुम्हें जो बात कहना है।
न घबड़ाना कभी इतिहास यह तुमको सिखाता है।।

न कारागार में डरना, न डंन्डा से, न फांसी से।
जो हो सच बात कह देना यही एक संग जाता है।।

करें ''शिवराम'' रक्षा ईश उसका ध्यान बस धरना।
मिलेगा खुद उसे बदला तुम्हें जो खल सताता है।।

''फिरंगिआ'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाश : श्री प्रसाद माहेश्वरी।

भारत देश हमारा प्यारा

बहती सनजु[1] जमुना गंगा, दिखा रही है लहर उमंगा ।
तीस कोट नर रहते संगा, सकल विश्व को दिल से प्यारा।।
भारत देश हमारा प्यारा।।

प्रगटे व्यास राम चन्दर से, सत्य प्रतिज्ञा हरिश्चन्दर से ।
मोहनदास कर्म चन्दर से, कहते देश हमारा प्यारा।।
भारत देश हमारा प्यारा।।

हम इस पर निज प्राण हरेंगे, दुख दारुण से नहीं डरेंगे ।
निश्चय मुल्क स्वतन्त्र करेंगे, आंखों का यह तारा प्यारा।।
भारत देश हमारा प्यारा।।

''मनहरन श्याम'' शीर्षक पुस्तक से।
लेखक : पं० मनोहर लाल शुक्ल, फतेहपुर ।
(1) सरयू

भारत माता तेरी जय हो

भारत माता तेरी जय विजय हो

तू शुद्ध-बुद्ध औ प्रेम की आगार ।
तेरा विजय सूर्य्य माता उदय हो ।।भा०।।

हो ज्ञान सम्पन्न जीवन सफल तेरा ।
सन्तान तेरी अखिल प्रेममय हो ।।भा०।।

हो भीष्म से वीर अर्जुन सदृश वीर ।
अकबर शिवाजी का फिर से उदय हो ।।भा०।।

गांधी रहैं याँ तिलक फिर भी आवें ।
अरबिन्द, लाला, विपिनका विजय हो ।।भा०।।

शौकत का संकल्प पूरण करै ईश ।
विघ्न और बाधा सभी का प्रलय हो ।।भा०।।

तेरे लिये जेल हो स्वर्ग का द्वार ।
बेड़ी की झन-झन में बीना का लय हो ।।भा०।।

आवै पुनः कृष्ण देखैं दशा तेरी ।
सरिता सरों, में भी बहता प्रनव हो ।।भा०।।

कहता ''खलील'' आज हिन्दू मुसलमान ।
सभी मिलके बोलो जननि तेरी जय हो ।।भा०।।

''जलियान की क्रूरकथा'' शीर्षक पुस्तक से।
लेखक एवं प्रकाशक : रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल, काशी ।

स्याह दिल

अगर है नाज़ उनको तोप और जंगी रिशालों में।
क़यामत का असर रखते हैं हम भी अपने नालों में।।

फंसा है इस कगर[1] हिन्दोस्ताँ यूरुप की चालों में।
जकड़ जाती है जैसे मक्खियां मकड़ी के ज़ालों में।।

भुलादें भेद दिल से आप गोरे और काले का।
अगर रहना है हिलमिल कर तुम्हें हम हिन्द वालों में।।

अजब क्या है अगर हिन्दू मुंसलमानों में एका है।
खुद्राही एक है खुद मशजिदों में और शिवालों में।।

वफ़ादारी के एवज़ में दिया भारत को रौलट-खेल।
छिपा है स्याह दिल बेशक तुम्हारी गोरी खालों में।।

बने बैठे रहो खुद अपने ही दिल में मियां मिठ्ठ[2]।
मगर है आपकी गिनती ज़माने के रिज़ालों में।।

दग़ाबाज़ों से ऐ ''सरयू'' ज़माना होगया वाक़िफ़।
नहीं फँसने का अब हिन्दोस्ताँ यूरप की चालों में।।

''तरानये आज़ाद'' शीर्षक पुस्तक से।
लेखक : पं० सरयूनारायण शुक्ल, कानपुर।
मुद्रक : पं० गंगाप्रसाद शुक्ल सुधासन्यारक प्रेस, कानपुर।
प्रकाशक : आज़ाद ग्रंथमाली, कानपुर।

(1923)

(1) कदर

(2) मिठ्ठू

आबरू सरकार की

बेगुनाहों पर बमों की बे ख़तर बौछार की।
दे रहे हैं धमकियां बन्दूक और तलवार की।।

बागे-जलियां में निहत्थों पर चलाईं गोलियां।
पेट के बल भी रेंगाया जुल्म की हद पार की।।

हम गरीबों पर किये जिसने सितम ब इन्तहा।
याद भूलेगा नहीं उस डायरे बदकार की।।

या तो हम मर ही मिटेंगे या तो लड़ेंगे स्वराज।
खत्म हुज्जत होती है इस वार अब हर बार की।।

शोर आलम में मचा है गान्धी के नाम का।
क्वार[1] करना उसको चाहा अपनी मिट्टी क्वार[2] की।।

जिस जगह पर बन्द होगा शेर नर वह हिंद का।
आबरू बढ़ जायगी उस जेल की दीवार की।।

जेल में भेजा हमारे लीडरों को बेक़सूर।
लार्ड रीडिंग ने ये अच्छी न्याय की भरमार की।।

खूने-मज़लूमा की ''सरयू'' अब तो गहरी धार में।
कुछ दिनों में डूबती है आबरू सरकार की।।

'तरानये आज़ाद'' शीर्षक पुस्तक से।
लेखक : पं० सरयूनारायण शुक्ल, कानपुर।
मुद्रक : पं० गंगाप्रसाद शुक्ल, सुधासन्यारक प्रेस, कानपुर।
प्रकाशक : आज़ाद ग्रंथमाली, कानपुर।
(1923)

(1) ख़्वार

(२) ख़्वार

भारत की मुकद्दमाबाजी

भारत की दुर्दशा का सब से पहला कारण बताते हैं ।
सन् सत्रह के मुकद्दमों की फ़ैहरिस्त तुम्हें सुनाते हैं ।।

फौजदारी में चले मुक़द्दमा अठारह लाख पचास हजार ।
क़त्ल के चार हजार सात सौ सतानवे का किया शुमार ।।

डकैती में दो हजार नौ सौ अस्सी के आगे हैं चार ।
हाय ''जिना विलजवर'' के जुर्मों की सूची कहूं व्योरेवार ।।
तेतालीस हज़ार आठ सौ अड़तीस गणना पाते हैं।।

लैन-दैन के मुक़द्दमे छै लाख से ऊपर लड़ावें हम ।
उन्नीस हज़ार चार सौ छप्पन पशु चोरी के गिनावें हम ।।

मामूली चोरी के मुक़द्दमा दो लाख तक पहुंचावें हम ।
दो लाख छत्तीस हज़ार तीन सौ नक़ब में पकड़े जावें हम ।।
आगे सज़ा जो मिली उन्हें हम उसका फल समझाते हैं ।।

चार सौ चौरानवे ऐसे हैं जिनको मिली फांसी की सज़ा ।
दो सौ तेईस गये कालापानी मुल्क और परिवार तजा ।।

एक लाख चौहत्तर सहस्र दो सौ करते जेल में मज़ा ।
उन्नीस हज़ार चौंतीस ने खाये बेंत न आई फिर भी क़ज़ा ।।
छै लाख छत्तीस हज़ार दो सौ दस जुर्माना भुगताते हैं ।।

16—103 Dte. of Archives/91

पन्द्रह-पन्द्रह दिन की सज़ा हुई चौबीस सहस्र पांच सौ चार ।
सहस्र छयानवे सात सौ इक्कीस छै मास को गये कारागार ।।

आठ लाख तुम से रोज़ाना कोर्ट फ़ीस लेती सरकार ।
शोक यही है धन लुटता और झूठ का होता है प्रचार ।।
कहै हरिदत्त भारतवासी इस पर भी नहीं शरमाते हैं ।।

''स्वदेश गीताञ्जलि'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक :,पं० हरिदत्त शर्मा ।

(सम्वत् 1977 वि०)

भारत की विधवायें

आज एक दुख भरी कहानी हिन्दुस्तान की सुनाऊं मैं।
पत्थर के समान हृदयों को दो-दो आंसू रुलाऊं मैं ।।

दु:ख सभी सह लिये परन्तु अब एक सहा नहीं जाता है ।
कन्याओं की दशा देख कर कलेजा मुँह को आता है ।।

मर्दम शुमारी की रिपोर्ट पढ़ वज्र हृदय थर्राता है ।
यही पाप भारत के ऊपर विपद नई-नई लाता है ।।
एक-एक वर्ष की एक सौ चौदह विधवा तुम्हें गिनाऊं मैं ।।

दो वर्ष की उमर जिनकी है आठ सौ छप्पन विधवायें ।
माता की गोद में दूध पीती हुई विधवा कहलायें ।।

एक हजार आठ सौ विधवा तीन वर्ष की यहां पायें ।
चार हजार सात सौ त्रेपन चार साल की दिखलायें ।।
सुनो कलेजा थाम हिन्दु जो कुछ अब दर्शाऊं मैं ।।

पांच वर्ष की आयु जिनकी नौ हज़ार दो सौ ब्यासी ।
पांच से दस तक की विधवायें जिनके गले में दी फांसी ।।

चौरानवे हज़ार दो सौ दश हैं जिनकी गणना खासी ।
दश से पन्द्रह तक की दो लाख पच्चीस सहस्र इक्यासी ।।
और सुनो आगे कुल विधवाओं का मीज़ान बताऊं मैं ।।

कुल विधवा दो करोड़ पैंसठ लाख हिन्द में रोती हैं ।
माता-पिता नाई पिरोहित का सत्यानाश ही खोती हैं ।।

आया होश देख दुनियां को बीज पाप के बोती हैं ।
खुद ही आप जानते हैं जो-जो घटनायें होती हैं ।।
कहै हरिदत्त इस पाप से भारत को आज़ाद कराऊं मैं ।।

''स्वदेश गीताञ्जलि'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : पं० हरिदत्त शर्मा ।
(सम्वत् 1977 वि०)

मातृ-वन्दना

ऐ मातृ-भूमि तेरे चरणों में शिर नबाऊं ।
मैं भक्ति भेट अपनी सेवा में तेरी लाऊं ।।

माथे पै तू हो चन्दन छाती पै तू हो माला ।
जिह्वा पै गीत तू हो मैं तेरा नाम गाऊं ।।

जिससे सपूत उपजें श्रीराम कृष्ण जैसे ।
उस तेरी धूल को मैं निज सीस पर चढ़ाऊं ।।

पानी समुद्र जिसकी धूली का पान करके ।
करता है मान तेरे इस पीर को मनाऊं ।।

वह देश मान वाले चढ़कर उतर गये सब ।
गोरे रहे न काले तुझको ही एक पाऊं ।।

सेवा में तेरी सारे भेदों को भूल जाऊं ।
वह पुण्य नाम प्रति दिन सुनूं और सुनाऊं ।।

तेरे ही काम आऊं तेरा ही मंत्र गाऊं ।
मन और नेह तुझ पर बलिदान मैं चढ़ाऊं ।।

''स्वदेश गीताञ्जलि'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : पं० हरिदत्त शर्मा ।

(सम्वत् 1977 वि०)

विनय

इस देश को हे दीन बन्धो! आप फिर अपनाइए।
भगवान! भारतवर्ष को फिर पुण्य भूमि बनाइए।।

सर्वत्र बाहर और भीतर रक्त भारत हो चुका।
फिर भाग्य इसका हे विधाता! पूर्व-सा पलटाइए।।

यह सृष्टि-गौरव-गज ग्रसित है ग्रह दशा के ग्राह से।
हे भक्त वत्सल! शुभ सुदर्शन चक्र आप चलाइए।।

शून्य शमसान-समान भारत हाय! कब से हो चुका।
आकर कराल विपत्ति-विष से ब्योमकेश बचाइए।।

गोपाल! अब वह चैन की बंशी बजेगी कब यहां।
आलस्य से अभिभूत हम को कर्म्म[1] योग सिखाइए।।

जिस बसुमती पर आपने बहु ललित लीलाएं रचीं।
करुणा निधे! इस काल उसको आप यों न भुलाइए।।

पशु-तुल्य परवशता मिटे, प्रकटे यथार्थ मनुष्यता।
इस कूपमण्डूकत्व से परमेश पिण्ड छुड़ाइए।।

जीवन गहन बन-सा हुआ है हम भटकते हैं जहां।
हे प्रभुवर! सदय हो कर, सन्मार्ग पर पहुंचाइए।।

वह पूर्व की सम्पन्नता यह वर्त्तमान विषन्नता ।
अब तो प्रसन्न भविष्य की आशा यहां उपजाइए ।।

वर मंत्र जिसका मुक्ति था पर तंत्र पीड़ित है वही ।
फिर वह परम पुरुषार्थ इसमें शीघ्र ही प्रकटाइए ।।

यह पाप पूर्ण परावलम्बन चूर्ण हो कर दूर हो ।
फिर स्वावलम्बन का हमें प्रिय, पुण्य पाठ पढ़ाइए ।।

किस के कारण हो कर रहें? अब तुम बिना गति कौन है।
हे देव! वह अपनी दया फिर एक बार दिखाइए ।।

''स्वतंत्रता का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : पाण्डेय पुण्यात्मा, सारन।
मुद्रक : महादेव प्रसाद, काशी ।
(1930)

(1) कर्म

यदि देश हित मरना पड़े

यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रों वार भी ।
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी ।।

हे ईश ! भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो ।
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म्म[1] हो ।।

मरते 'विस्मल' रोशन लहरी अश्फाक अत्याचार से ।
होंगे पैदा सैकड़ों उनके रुधिर की धार से ।।

''स्वतंत्रता का बिगुल'' शीर्षक पुस्तंक से।

प्रकाशक : पाण्डेय पुण्यात्मा, सारन ।

मुद्रक : महादेव प्रसाद, काशी ।

(1930)

(1) कर्म

स्वाधीनते

स्वाधीनते! आज वीणा बजा दे

हर तार से हो मधुर स्वर की झंकार ।
शुभ शांतिमय प्रेम के गीत गादे ।।

उन्मत्त हों प्राण सुन तेरा आह्वान ।
ऐसी मधुर तान सब को सुना दे ।।

तेरे लिए हो मुबारक हमें मौत ।
जेलों का डर सब के दिल से भगा दे ।।

जंजीर लोहे की माला बने आज ।
बेड़ी की झनझन से जग को जगा दे ।।

होवे शहीदों के खूं से जमीं लाल ।
जेलों में वीरों की बस्ती बसा दे ।।

बंधन में है मुक्ति, जीवन में है मृत्यु ।
यह भाव सब के हृदय में जगा दे।।

सानंद तुझ पर निछावर करें प्राण ।
'रञ्जन' के दिल में लगन ये लगा दे ।।

''स्वतंत्रता का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : पाण्डेय पुण्यात्मा, सारन।
मुद्रक : महादेव प्रसाद, काशी ।

(1930)

आज़ादी के दीवानों का

है आज जमाना ऐ वीरो! आजादी के' दीवानों का ।
जीवन धन सब कुरबान करो, है आज समय बलिदानों का ।।

अपना स्वराज्य लेना होगा, इंग्लैण्ड आप भग जायगा ।
अपने पैरों पर आप डटो, तुम तजो आश परमानों का ।।

हिमालय से सागर लों अरु ब्रह्मदेश से गुर्जर देश ।
अटक कटक लों आदर हो, अब गांधी के फरमानों का ।।

हो तौक गुलामी टूक-टूक, माता के बंधन कट जावें ।
बलि-वेदी पर बलि होने को अब चले झुण्ड मरदानों का ।।

चलें एक सिरे से आज देश में, आग लगा दें हे भाई ।
हो देश बीच अब उथल-पुथल, अरु खौले खून जवानों का ।।

फांसी से भी तुम नहीं डरो, परवाह नहीं गोले बरसें ।
हो खुली संगीनों पै छाती यह कौल रहे मरदानों का ।।

''स्वतंत्रता का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : पाण्डेय पुण्यात्मा, सारन।
मुद्रक : महादेव प्रसाद, काशी ।
(1930)

17—103 Dte. of Archives/91

ऐ भारत वीरों

बन्धन मुक्त करो नैया को, ऐ भारत वीरों!

नाम कमाया जो पुरुषों ने, क्या हम उसे डुबायेंगे?
दूध पिया है भारत मां का, क्या हम उसे लजायेंगे?
कर्म वीर बन जावो प्यारे, ऐ भारत वीरों!

सोचो-सोचो प्यारे भाई, हम क्या थे क्या हो जायेंगे।
बेड़ी पहन दासता की दुनियां में नीच कहायेंगे।।
कर्म क्षेत्र में उतर पड़ो अब, ऐ भारत वीरों!

क्या हम अपने ही हाथों से, अपना गला फसायेंगे?
नाश देख कर सन्मुख अपने, पांव पसार सो जायेंगे?
स्वतंत्रता पर डटे रहो अब, ऐ भारत वीरों!

''स्वतंत्रता का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : पाण्डेय पुण्यात्मा, सारन।
मुद्रक : महादेव प्रसाद, काशी।
(1930)

आता है वह जमाना

भारत न अब रहेगा, हरगिज गुलाम खाना ।
आजाद होगा होगा, आता है वो जमाना ।।

खूं खौलने लगा है, हिन्दोस्तानियों का ।
कर देंगे जालिमों का हम बन्द जुल्म ढ़ाना ।।

कौमी तिरंगे झण्डे पर जां निसार अपनी ।
हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना ।।

अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे ।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ।।

परवाह अब किसे है जेल वो दमन की प्यारे ।
इक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना ।।

भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे ।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ।।

''स्वतंत्रता का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से।

प्रकाशक : पाण्डेय पुण्यात्मा, सारन।

मुद्रक : महादेव प्रसाद, काशी ।

(1930)

प्यारा भारत देश

जय-जय प्यारा भारत देश

जय-जय प्यारा, जग से न्यारा, शोभित सारा देश हमारा ।
जगत मुकुट, जगदीश दुलारा, जय सौभाग्य, सुदेश ।।जय।।

स्वर्गिक शीश फूल पृथिवी का, प्रेम मूल, प्रिय लोक त्रयी का ।
सुललित-प्रकृति-नटी का टीका, ज्यों निशि का राकेश ।।जय।।

जय-जय शुभ्र हिमाचल श्रृंगा, कलरव निरत कलोलिनी गंगा ।
भानु प्रताप चमत्कृत अंगा, तेज पुंज तप वेश ।।जय।।

जग में कोटि-कोटि युग जीवे, जीवन सुलभ अमीरस पीवे ।
सुखद बितान सुकृति का सीवे, रहे स्वतंत्र हमेश ।।जय।।

''स्वतंत्रता का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से।

प्रकाशक : पाण्डेय पुण्यात्मा, सारन।

मुद्रक : महादेव प्रसाद, काशी ।
(1930)

ऐ हिन्द के सपूतो

ऐ हिन्द के सपूतो! क्या है दशा तुम्हारी ।
किस नींद सो रहे हो, क्या है दशा तुम्हारी ।।

देखो तो मां को अपनी, कैसी दशा बनी है।
रानी जो थी कभी वह, अब हो गयी भिखारी ।।

कपड़ा रहा न तन पै, खाने को कुछ नहीं है ।
नैनों से नीर बहता, करती है आहो जारी ।।

ठग-ठग के माल उसका ले जा रहा विदेशी ।
दौलत भी उसकी देखो, जाती विदेश सारी ।।

जागो अभी भी चेतो, क्यों वक्त खो रहे हो ।
सर्वस्व अपना खोकर क्यों हो रहे भिखारी ।।

''स्वतंत्रता का बिगुल'' शीर्षक पुस्तक से।
प्रकाशक : पाण्डेय पुण्यात्मा, सारन।
मुद्रक : महादेव प्रसाद, काशी ।
(1930)

जै मां पुकारें

आओ सभी मिलकर जय मां पुकारें।
मां का सुयश आज जग में प्रचारें ।।

गावें विजय गान हिन्दू मुसलमान।
पारस परखि भेद सबको विसारें ।।

कावा व काशी मिले मां पै एक साथ।
माता के मन्दिर पर दोनों को वारें ।।

माला करें दूर तसवी को रख देवें।
लोहे के जंजीर हाथों पै धारैं ।।

चन्दन का टीका व रजको करें दूर।
खाके वतन का तिलक सिर पै धारैं ।।

गांधी व शौकत पुजारी बने इसके।
मिलकर चलो आरती हम उतारैं ।।

कर्तव्य पालन करें होके निर्भीक।
जेलों से फांसी से हिम्मत न हारें ।।

पूजा करैं मांकी पद चन्द्र की नित्य।
मूर्ती सदा उनकी हृदय बीच धारैं ।।

सब शक्ति सब भक्ति सब प्रेम अनुरक्ति।
तन मन रतन धंन सभी इस पै बारैं ।।

''राष्ट्रीय गान'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : लाल बिहारी लाल टंडन, गौंड़ा।

प्रकाशक : लालबिहारी टंडन, गौंडा।

याद रखो जलियांनवाला बाग को

देदो स्वराज्य देदो-देदो स्वराज्य देदो

सुन-सुन पुकार मेरी भारत के नौजवानो ।
सच्चे सपूत बन के पुरुषार्थ बल दिखाओ ।।

मौका बढ़ी मिली है खोना न भाई इसको ।
मिल कर सभी खुशी से सहयोग त्याग डालो ।।

कर याद भीम अर्जन तुम भी हो आर्य वंशी ।
सिर साथ ही उसी के जलियान बाला जुल्मी ।।

होगा न एक हिन्दू मुस्लिम कोई भी भाई ।
किस को न है सताया! बेपीर यह कसाई ।।

हां दिल तड़प के रहता आंखों से नीर बहता ।
मुख चन्द्र उस बदन का भूले नहीं भुलाता ।।

इज्जत ओ दीन पर हम सबको निसार देंगे ।
कुरवां करेंगे जी को लेकिन स्वराज्य लेंगे ।।

अब क्यों पड़े हो भैय्या जागो उठो खड़े हो ।
फिर-फिर पुकार सुन के सहयोग त्याग डालो ।।

देदो स्वराज्य देदो-देदो स्वराज्य हमको ।
दारस उमीद कब तक? हक है स्वराज्य देदो ।।

भारत हमारा ही है भारत हमारा होगा ।
कुछ दिन तलक जो था यह आगे नहीं रहेगा ।।

''राष्ट्रीय गान'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : लालबिहारी लाल टंडन, गौंड़ा ।
प्रकाशक : लाल बिहारी टंडन, गौंडा ।

स्वराज्य

भारत के वीर भाई ले लो स्वराज्य लेलो ।
कायरता को छोड़ प्यारे ले लो स्वराज्य लेलो ।।

जिन्दा नहीं वो मुर्दा निज हक को न जाना ।
अब भी सम्हल खड़े हो ले लो स्वराज्य लेलो ।।

माता तुम्हारी रोती गैर हाथ में पड़ी है ।
मिलने को है लपटती ले लो स्वराज्य ले लो ।।

बेटा बनो श्रबनसा कांधे पर जिसने ढोंया ।
वैसे बनो तु प्यारे ले लो स्वराज्य ले लो ।।

अगर न हो तो वैसे एक उठ खड़े हो ।
पावो जिधर उधर से ले लो स्वराज्य ले लो ।।

भारत के कर्मचारी धर मौन साध बैठो ।
रघुबीर का मंत्र ये ही ले लो स्वराज्य ले लो ।।

भारत की स्वतंत्रता पर कब तक विचार होगा ।
पूंछें तो भाई इनसे जब चीज है इनकी ।।

देने में क्या उजर है कब तक विचार होगा ।
निज जानि स्वामि तुमको माता शरण में सौंपा ।।

''राष्ट्रीय गान'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : लालबिहारी लाल टंडन, गौंडा ।

प्रकाशक : लाल बिहारी टंडन, गौंडा ।

गर्वन्मेन्ट को सर झुकाना पड़ेगा

गर्वन्मेन्ट को सर झुकाना पड़ेगा ।
विलायत को वापिस ही जाना पड़ेगा ।।

बहुत इसने भारत को लूटा है अब तक ।
मगर अब तो डेरा उठाना पड़ेगा ।।

उठो नौजवानों कि भारत को फिर से ।
तुम्हें बारदौली बनाना पड़ेगा ।।

कहीं सीधी अंगुली से घी है निकलता ।
असहयोग खंजर चलाना पड़ेगा ।।

हमारे ही धन से ये फूले-फले हैं ।
हमें यह अवश्य ही दिखाना पड़ेगा ।।

नहीं गर खरीदेंगे कुछ भी विदेशी ।
इन्हें जा कहीं मुंह छिपाना पड़ेगा ।।

हुआ राज्य गांधी का भागो ओ बन्दर।
यह डंका हमें अब बजाना पड़ेगा ।।

है कहता 'त्रिवेदी' ये डंका बजाके ।
तुम्हें हिंद से भाग जाना पड़ेगा ।।

''मैगज़ीन'' शीर्षक पुस्तक से।
लेखक : आर० एस० दास त्रिवेदी, देहली ।
प्रकाशक : त्रिवेदी एण्ड कं०, देहली ।

18—103 Dte. of Archives/91

यों गोरे बन्दर

बोले आपस में यों गोरे बन्दर।
भागो भारत से अब दुम दबाकर।।

चला गांधी का है ऐसा चक्कर।
जिसको देखो पहनता है खद्दर।।

यह मिटायेंगे अब मानचेस्टर।
भागो भारत से अब दुम दबाकर।।

न अब दाल यहां पै गलेगी।
फूटी कौड़ी न यहां से मिलेगी।।

हाय औलाद कैसे पलेगी।
भागो भारत से अब दुम दबाकर।।

ऐसी गांधी ने आंधी चलाई।
सब के दिल में है ये ही समाई।।

बनो सत्य-ग्रही सिपाही।
भागो भारत से अब दुम दबाकर।।

न गर लूट इतनी मचाते।
नोंन आटे में जितना है खाते।।

तो हरगिज न हम यहां से जाते।
भागों भारत से अब दुम दबाकर।।

हाय कैसी हुई है तवाही।।

''मैगज़ीन'' शीर्षक पुस्तक से।
लेखक : आर० एस० दास त्रिवेदी, देहली।
प्रकाशक : त्रिवेदी एण्ड कं०, देहली।

थोड़े दिन

सताले हम गरीबों को अरे बदकार थोड़े दिन ।
कहाले हम गरीबों से अजी सरकार थोड़े दिन ।।

हमारा खून नाइक भी कभी तो रंग लायेगा ।
रहेगी हाथ में कातिल तेरे तलवार थोड़े दिन ।।

तेरे इस जुल्म का बदला मिलेगा ज़ल्द ही जालिम ।
चलाले तू निहत्थों पर अरे हथियार थोड़े दिन ।।

हमारी जां फिशानी खाक में तुझको मिलायेगी ।
बहाले खून की नदी, अरे खूं खार थोड़े दिन ।।

तेरी इन गन मशीनों से नहीं डरते हैं हम हर्गिज ।
चलाले गोलियां अपनी अरे गद्दार थोड़े दिन ।।

मक्कर का जाल फैलाकर है लूटा तूने भारत को ।।

''मैगज़ीन'' शीर्षक पुस्तक से।
लेखक : आर० एस० दास त्रिवेदी, देहली ।
प्रकाशक : त्रिवेदी एण्ड कं०, देहली ।

खुद ही देख लेना

गिरफ्तारियों से खुद ही देख लेना।
मिटेगी यह हस्ती तेरी देख लेना ।।

डराता हमें जेल से क्या सितमगर।
डरेंगे नहीं हम कभी देख लेना ।।

हथेली पै रक्खा है सर हमने अबतो।
चढ़ा देंगे एक दिन बली देख लेना ।।

बढ़ाया कदम आगे हमने वह हरगिज।
हटेगा न पीछे कभी देख लेना ।।

भरो जेलखाने या गोली चलाओ।
टलेंगे न सूली से भी देख लेना ।।

कसर अपनी करनी में जालिम न कर तू।
मिटायेगी तुझको खुदी देख लेना ।।

हुकम चाहते हैं जरा गांधीजी का।
बहा देंगे खूं की नदी देख लेना ।।

''मैगज़ीन'' शीर्षक पुस्तक से।

लेखक : आर० एस० दास त्रिवेदी, देहली।

प्रकाशक : त्रिवेदी एण्ड कं०, देहली।

राज अब जाने को है

बांध ले बिस्तर फिरंगी राज अब जाने को है ।
जुल्म काफी कर चुके पबलिक[1] बिगड़ जाने को है ।।

गोलियां तो खा चुके अब तोप भी हम देख लें ।
मर मिटेंगे मुल्क पर फिर इंकलाब आने को है ।।

वीर नेहरू जेल में हैं कौम के वह ना खुदा ।
जेलखाना तोड़ डालें यह खबर आने को है ।।

कह रहे हैं बाबा गांधी मानलो शर्तें तमाम ।
बरना फिर नकशा हकूमत का पलट जाने को है ।।

आ मिले हैं जंग आजादी में अब मिस्टर पटेल ।
देख लेना राजशाही पोल खुलजाने को है ।।

लिखदई गांधी ने चिट्ठी आखरी पंजुम के नाम ।
अब संभल जा तू फिरंगिया नाम मिट जाने को है ।।

मालवी ने वार अपना कर दिया इंगलैंड पर ।
देखना अब मानचेस्टर भी उजड़ जाने को है ।।

''मैगज़ीन'' शीर्षक पुस्तक से।
लेखक : आर० एस० दास त्रिवेदी, देहली ।
प्रकाशक : त्रिवेदी एण्ड कं०, देहली ।
(1)पब्लिक

आज़ादी की लगन

आग आज़ादी की भबकी है हमारे तन में।
हम तो जाने के लिये बैठे हैं खुश हो रण में ।।

देश बरवाद हुवा खानये वीराएं अपना ।
ग़ैर क़ाबिज़ हुए बैठे हैं मेरे गुलशन में ।।

भूखे भारत के पड़े लाल सदा रोते हैं ।
कोई सड़कों पै पड़ा है कोई व्याकुल बन में ।।

छीने हथियार मेरे मुझ को निहत्था करके ।
गोली भर-भर के लगाते हैं हमारे तन में ।।

बन्द कर मेरी जवां[1] मुंह पर लगाया ताला ।
हंसके कहते हैं कहो क्या है तुम्हारे मन में ।।

डाल कर बेड़ियां और बन्द कफस करके मुझे ।
खूब जकड़ा है गुलामी के मुझे बन्धन में ।।

मालो ज़र लूट कर अंगरेज़ चला लन्दन को ।
इस लिये प्रेमी समाया है मेरी चितवन में ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।

प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।

मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

(1) जुबां

क्रान्ति आह्वान

चाहे जितना भले दमन हो ।
मन मिटने के लिये मगन हो ।।

खूं शहीदों का रंग लाये लासों का सागर लहराये ।
जंग में विजय ध्वजा फहराये दुश्मन देख-देख दहलाये ।।

भेंट तुम्हारी यह जीवन हो ।
मन मिटने के लिये मगन हो ।।

मची मुल्क में उथल-पुथल हो, खूब क्रान्ति कोलाहल हो ।
वीरों का दिल रहा मचल हो, व्याकुल नौकर शाही दल हो ।।

नाश जालिमों का भगवन् हो ।
मन मिटने के लिये मगन हो ।।

बन्दी गृह के ताले टूटें, देश भक्त सब निर्भय छूटें ।
मूंज देशद्रोही तब कूटें, स्वतन्त्रता का सुख हम लूटें ।।

हरा-भरा अब हिन्द चमन हो ।
मन मिटने के लिये मगन हो ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।
प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।
मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

रण गर्जना

रण में कैसा किस से नाता

जो सन्मुख आवे सोई अरि है ।
चाहे सुत पितु हो चाहे भ्राता ।।

तुम्हें सुहावें उच्च पदवियां ।
हम को निज कर्त्तव्य सुहाता ।।
रण में कैसा किस से नाता ।।

तुम को प्रिय है निज यश वैभव ।
हम को प्रिय है भारत माता ।।
रण में कैसा किस से नाता ।।

तुम हो यदि हिरणा कश्यप नृप ।
हम प्रहलाद हिन्द के त्राता ।।
रण में कैसा किस से नाता ।।

सारे नाते हैं एक धर्म के ।
धर्म हमें यह मर्म सिखाता ।।
रण में कैसा किस से नाता ।।

कैवलि हुई सुरपुर सुर हुइ हैं ।
कै हुइ हैं निज देश विधाता ।।
रण में कैसा किस से नाता ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।
प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।
मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

वीर प्रतिज्ञा

प्राणों की भेंट चढ़ायेंगे हम बलिवेदी पर जायेंगे

हम अमर नहीं मरने का डर, यह तो जीवन की राह भली ।
हैं शिवा प्रताप गये जिससे, वीरों की है वही गली ।।
जननी के कष्ट छुड़ायेंगे ।। हम वलिवेदी०

हम बड़े शौक से पहिनेंगे, पहिनायेंगे जो हतकड़ियां ।
जेलों में अलख जगा करके, तोड़ेंगे माता की कड़ियां ।।
अन्याई राज्य मिटायेंगे ।। हम बलिवेदी०

भाले तलवारों तोपों से हम कभी नहीं भय खायेंगे ।
हम देश प्रेम मतवाले हैं, सूली पर भी चढ़ जायेंगे ।।
भारत स्वाधीन बनायेंगे ।। हम बलिवेदी०

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।

प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।

मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

19—103 Dte. of Archives/91

शहीदाने वतन की सदा

जोगी के वेश में हम निकले, ऐअहले वतन तुम शाद रहो ।
हम जान वतन पर देने को, निकले हैं तुम आबाद रहो ।।

घर बार सभी अब छोड़ा है, की है उल्फत आजादी से ।
हम रहें भी रहें नरहें तुम तो, ऐ अहले वतन आजाद रहो ।

आज़ादी हम पर रोती है, मुंह अश्कों से हसरत धोती है ।
जब बच्चे मांओं से कहते हैं, हम हों कि नहों तुम शाद रहो ।।

तहरीक खुदा आज़ादी की, यूं राह हमें दिखलाती है ।
जब आया वक्त रिहाई का आज़ाद रहो आज़ाद रहो ।।

उस काम का हर एक आमिल हो, तहरीक खुदा जब शामिल हो ।
नोचन्द कहो उनसे तुम अब, चूड़ी पहनो और शाद रहो ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।

प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।

मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

उठ जाग मुसाफिर

उठ जाग मुसाफिर भोर भई ।
अब रैन कहां जो सोवत है ।।

जो जागत है सो पावत है ।
जो सोवत है सो खोवत है ।।

टुक नींद से अखियां खोल ज़रा ।
और अपने रब में ध्यान लगा ।।

यह प्रीति करन की रीति नहीं ।
सब जागत है तू सोवत है ।।

जो कल करना हो(1) आज करलो ।
जो आज करना हो अब करलो ।।

जब चिड़ियन ने चुग खेत लिया ।
अब पछताए क्या होवत है ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।

प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।

मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

(1) है

स्वतन्त्रता पूजन

अधीन होकर बुरा है जीना, है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।
सुधा को तजकर ज़हर का प्याला है, पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।।

पड़ी हों हाथों में हथकड़ी यदि, तो स्वर्ग के सुख से लाभ क्या है ।
नरक के दुख में निवास निशिदिन है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।।

जो दास होकर मिलें भवन में सुस्वादु भोजन तो तुच्छ है सब ।
सदैव उपवास करके वन में, विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।।

मिलें उपाधियां मान पदवी जो सेवा करके तो व्यर्थ है सब ।
घृणा के गड्ढे में होके व्याकुल उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।

प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।

मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

न क़िसी क़ी आंख का नूर हूं

न किसी की आंख का नूर हूं ।
न किसी के दिल का करार हूं ।।

जो किसी के काम न आ सके ।
मैं वह एक मुश्ते गुबार हूं ।।

न दवाये दर्दे जिगर हूं मैं ।
न किसी की मीठी नज़र हूं मैं।।

न इधर हूं मैं न उधर हूं मैं ।
न शकेब हूं न फ़राज़ हूं ।।

मैं नहीं हूं नग़मये जांफिजां ।
मेरा सुन के कोई करेगा क्या ।।

मैं बड़े वियोगी की हूं सदा ।
मैं बड़े दु:खी की पुकार हूं ।।

पढ़े फ़ातिहां कोई आये क्यों ।
कोई ला के शम्मा जलाये क्यों ।।

कोई चार फूल चढ़ाये क्यों ।
कि मैं बेकसों का मज़ार हूं ।।

मेरा बख़्त मुझ से बिछड़ गया ।
मेरा रंग-रूप बिगड़ गया ।।

जो चमन खिज़ा से उजड़ गया ।
मैं उसी की फ़सले बहार हूं ।।

मैं यहां रहूं या वहां रहूं ।
है खबर किसे कि कहां रहूं ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।
प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।
मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

कोई नहीं है ग़ैर

कोई नहीं है ग़ैर बाबा, कोई नहीं ग़ैर

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, देख सभी हैं भाई-भाई ।
भारत माता सबकी माता, गंगादेवी सबकी माई ।।

मत रख मन में बैर, बाबा! कोई नहीं है ग़ैर ।
कोई नहीं है ग़ैर, बाबा! कोई नहीं है ग़ैर ।।

भारत के सब रहने वाले, कैसे गोरे, कैसे काले ।
छूत-अछूत के झगड़े पाले, पड़ गये जिससे जान के लाले ।।

काहे का वह वैर, बाबा! कोई नहीं है ग़ैर ।
कोई नहीं है ग़ैर, बाबा! कोई नहीं है ग़ैर ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।

प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।

मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

राम और रहीम

मसजिदों में है रहीम, और मन्दिरों में राम है।
जपते हैं हिन्दू मुसलमां, जिसको वह एक नाम है।।

शंख काशी में बजाया, और अज़ां काबे में दी।
खुद पुजारी खुद बिलाले, रहबरे इस्लाम हैं।।

गउएं गोकुल में चराई, बकरियां मक्के में, खूब।
आप ही अहमद बना, और आप ही घनश्याम है।।

नसबीह और माला में बस, एक नाम ही का फ़र्क़ है।
सच अगर पूछो तो दोनों का ही इकसा काम है।।

खुल गया सब भेद 'नेयर' देखा जब यकताई को।
सारे मज़हब हैं खिलौने, खुद खिलाड़ी आप है।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा।

प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर।

मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून।

किस्मत का फेरे

दो फूल साथ फूले, क़िस्मत जुदा-जुदा है ।
एक का बना है सेहरा, एक क़ब्र पर चढ़ा है ।।

एक ही शजर की शाखें, दो एक साथ काटी ।
एक आग में जली है, एक का बना असा है ।।

एक ही सदफ़ से मोती, दो एक साथ निकले ।
एक पिस रहा खरल में, एक ताज में जड़ा है ।।

दो भाइयों को देखो, रिश्ते में हैं हक़ीक़ी ।
एक शाहे नामवर है, दर-दर का एक गदा है ।।

दो मुर्ग़ साथ आये, देखो तो उनकी क़िस्मत ।
एक फैज़ में छुटा है, एक क़त्ल हो रहा है ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।

प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।

मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

20—103 Dte. of Archives/91

मन की आँखें खोल

मन की आँखें खोल, बाबा ! मन की आँखें खोल

दुनिया क्या है एक तमाशा, चार दिनों की झूठी आशा,
पल में तोला, पल में माशा, ज्ञान-तराजू लेके हाथ में,
तोल सके तो तोल बाबा ! मन की आँखें खोल ।।

चोर लुटेरे दुनिया वाले, तन के उजले मन के काले,
इनसे अपना आप बचाले, रीत कहां की, प्रीत कहां की,
कैसे प्रेम--किलोल ? बाबा ! मन की आँखें खोल ।।

नींद में माल गवां बैठेगा, मन की जोत बुझा बैठेगा,
अपना आप लुटा बैठेगा, दो दिन की दुनिया में प्यारे !
पल-पल है अनमोल । बाबा ! मन की आँखें खोल ।।

मतलब की सब दुनियादारी, मतलब के सारे संसारी,
तेरा जग में को हितकारी ? तनमन का सब जोर लगाकर,
नाम हरी का बोल । बाबा ! मन की आँखें खोल ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।
प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।
मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

काया का पिंजरा डोले रे

एक सांस का पंछी बोले रे, काया का पिंजरा डोले रे

तन नगरी में मन है मन्दर, परमात्मा है जिसके अन्दर ।
दोनों नयन हैं पाक समन्दर, तू पापी पाप को धोले रे ।।
काया----डोले रे ।।

पिता पुत्र और पति-पत्नी का, यह झगड़ा है जीते जी का ।
यहां होता है कौन किसी का, इस भेद को आप क्यों खोले रे ।।
काया----डोले रे ।।

आने की शहादत जाना, जाने से क्या घबड़ाना ।
यह दुनिया मुसाफिर खाना, तू जाग जगत् या सोले रे ।।
काया----डोले रे ।।

''राष्ट्रीय गीतांजलि'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : हुलास वर्मा ।

प्रकाशक : रणवीर वर्मा प्रभाकर ।

मुद्रक : इम्पीरियल प्रेस, देहरादून ।

वीर प्रतीज्ञा

सत्य के आग्रह पै हम वारेंगे अपनी जान को।
पर न छोडेंगे कमी अपने बड़ों की बान को।।

कह चुके हैं जो कि हम अपनी जुबाने हालसे।
सर कटा देंगे मगर जाने न देंगे शान को।।

भीष्म अर्जुन भीम अरू हरिचन्द्र की सन्तान हैं।
कर प्रतिज्ञा अब न तोडेंगे कमी उस आन को।।

काल भी गर सामने आजाये कुछ पर्वा नहीं।
प्राण देदेंगे न हर्गिज सहेंगे अपमान को।।

आरहा है वक्त अब देंगे दिखा संसार को।
किस तरह से शत्रु के करते हैं मर्दन मान को।।

दैव कर आज़ाद भारत वरना ले अपना शरीर।
जीने की संसार में नहीं आरजु "आज्ञान", को।।

"सत्याग्रह का बिगुल" शीर्षक पुस्तक से।
लेखक एवं प्रकाशक : ज्ञान सिंह वर्मा, हरीपुर।
प्रिंटर : पं. जगदीश प्रसाद शर्मा, अलीगढ़।

(1923)

गांधी का संदेशा

निज देश की अब भी भलाई कर दिखाना चाहिये।
बहुत समय तक सो चुके अब नहीं सोना चाहिये ।।

जो कुछ के था करना मुझे सब कर दिखाया अब तुझे।
वैसेही अब करके भाई अब देखाना चाहिये।।

कर्तव्य है यही हमारा निज ज्ञान से तुम सोच लो।
कपड़ा विदेशी त्याग कर निज देश लेना चाहिये ।।

सब से सुल्भ[1] अब है यही चर्खा चलाना भाइयों।
चर्खे ही के सूतों का कपड़ा अब पहिनना चाहिये।।

गांजा, तम्बाकु, मद्य, ताड़ी; सिगरेट, बीड़ी छोड़दो।
जितना कु-वस्तु चीज है सब को त्यागना चाहिये।।

तो ये गुलामी तोड़ कर निज देश की सेवा करो।
निज देश सेवा के लिये बे खौफ रहना चाहिये।।

सब जातियां अपनी तरक्की में तरक्की कर रही।
अपनी तरक्की के लिए अब ध्यान देना चाहिये।।

कम दाम के नाकाम पतले अब विदेशी छोड़िये।
निज देश के बहु दाम की चीजों को लेना चाहिये।।

तक़दीर को रख ताक पर तदबीर करना चाहिये।
वालेन्टियर में नाम लिखा कर काम करो देश का।।

जेल के डर से न भाई कुछ न डरना चाहिये ।
कैसे कैसे देश सेवा के लिये तीरथ गए।।

बैसेही अब चल के भाई देख लेना चाहिये।
वालेन्टियर को काम जो कौंग्रेस से मिल जाय जो।।

शान्ति पूर्वक काम को शीघ्र करना चाहिये ।
जब तक सहें दुःख नहीं पर दुःख हरेंगे हम कहां।।
निज स्वार्थ त्यागन करके भाई परमार्थ करना चाहिये।।

नम्रता से मीठी बोली सब से बोलो भाइयों।
कोई पकड़ के ले चले खुश होके जाना चाहिये।।

जितना विदेशी जुल्म कर ले सब को सहलो भाइयों।
शान्ति पूर्वक काम कर के ''स्वराज'' लेना चाहिये।।

कैलाश की वितनी यही सब देश भाई से यही।
देश दुःख को देख कर सुख भूल जाना चाहिये।।

''राष्ट्रीय गीत संग्रह'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : काशी प्रसाद वर्मा।
प्रकाशक : बाबू कन्हैयालाल, पटना।
मुद्रक : बाबू सूर्यनारायण, काशी।
(सम्वत्1978 वि.)

(1) सुलभ

चर्खा

गांधी तू चर्खा चलाये चला जा।
लोगों को खद्दर पिन्हाये चला जा।।

किसी का कटे सर तो कटने दे लेकिन।
तू चकले को अपने घुमाये चला जा।।

आशिक बने मुल्क गाढ़े के हैं सब।
चीजें विदेशी जलाये चला जा।।

करें सादगी को पसन्द हिन्द वाले।
विदेशी के फैसन उठाये चला जा।।

कर दे तूं आज़ाद अब हिन्द को बस।
गुलामी से हमको छुड़ाये चला जा।।

मरें बेगुनाह यों ही लाखों करोड़ों।
तू मरतों को अमरित पिलाये चला जा।।

पूरन हुआ तेरे हुक्मों का तावे।
इसको भी चर्खा सिखाए चला जा।।

''राष्ट्रीय गीत संग्रह'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : काशी प्रसाद वर्मा।
प्रकाशक : बाबू कन्हैयालाल, पटना।
मुद्रक : बाबू सूर्यनारायण, काशी।
(सम्वत् 1978 वि०)

पंजाब का हत्याकाण्ड और असहयोग

रौलट बिल सरकार बनाया करके पूरण स्वेच्छाचार ।
घोर विरोध कियो भारत ने नहिं जनता की सुनी पुकार ।।

आत्म प्रतिष्ठा मिटी देश की कुचली जाय ॠषी सन्तान ।
सत्याग्रह गांधी ने कर दिया खैंची सत्य धर्म की आन ।।

शोक छाय गयो है भारत में पूरण फेर भई हड़ताल ।
नगर-नगर में शोक सभायें भैया होन लगी तत्काल ।।

करी बन्दना जगदीश्वर की व्रत से रहें सकल नर-नार ।
अमृतसर में हा! डायर ने भैया वादर डारे फार ।।

हुक्म बोल दिया कतलेआम का तजि पंजाब देश का नेह ।
मेह की बूंदन गोली बरषी जैसे गिरे भदैयां मेह ।।

खिची जुनरवी फेर मगरवी तेगा खिचा विलायत क्यार ।
चौतरफा से जनता घेरी ऊपर पड़ी बम्ब की मार ।।

बार-बार में गोली लागे चाहे तिल-तिल पर लगै तलवार ।
करी प्रतीज्ञा है जनता ने हट कर धरें न पैर पिछार ।।

फट-फट फट-फट मशीनगन होंय लथ-पथ गिरें पंजाबी जवान ।
बारह वर्ष के मदनलाल के हा, छाती पर भया निशान ।।

बड़ा जुल्म डायर ने कीना तस-नस कीनी सब पंजाब ।
घूंघट खोले तें अबलन के मुख कर उतर गई सब आब ।।

सत् वन्तिन के शील डिगाये सब के देखत नैन उधार ।
खानत पड़ गई रजपूती पर पगिया बांधन को धरकार ।।

नाक के बल से रेखा खींची पेट के बल से दिये चलाय ।
नंगे करि-करि बेंत जमाये दुर्गति करी बनाय-बनाय ।।

बहुतक युवती विधवा हुइ गईं छूटा पती देव का साथ ।
दूध पियंते बालक मारे और भये बालक बहुत अनाथ ।।

सो लुटी मिहरियां हा, दिन दुपहर दुहिता पकड़ घसीटीं केश ।
अत्याचार करो मन माना मानहुं बिना मर्द का देश ।।

जेहि गति देखी जब गांधी ने नैया डूबत हे मझधार ।
कवच अहिंसा का धारण कर बांधी असहयोग तलवार ।।

छोड़ आसरा जिंदगानी का कर दिया साफ-साफ एलान ।
छोड़ो गुलामी इन लोगन की अपने आप करौ गुजरान ।।

बेड़ी मार दई चर्खा की सब दल तिड़ी-बिड़ी हुइ जाय ।
बहुतक भैया देशद्रोही शामिल भये पाप में जाय ।।

खेल लेडियो में खेले थे नहिं कहुं पड़ा मर्द से काम ।
मुहरा पड़ गयो है गांधी से उलटा पड़ गया हिन्दुस्तान ।।

मान मान्चेस्टर के बिगड़े लंकाशायर गया दहलाय ।
चेम्स फोर्ड के छक्के छूटे सीधे भगे विलायत जाय ।।

दमन अस्त्र रीडिंग ने छोड़े भर दिये जेल ठसा-ठस जाय ।
शान्ति वृष्टि गांधी ने करदी रीडिंग कर्म ठोंक रह जाय ।।

21—103 Dte. of Archives/91

कहां कहैं कछु कहि नहिं आवै और बिन कहे रहा न जाय ।
अत्याचार पुलिस के देखे गुस्सा गई देश में छाय ।।

सो थाना फूंक दवो जनता ने चोरी-चोरा के मैदान ।
बन्द लड़ाई गान्धी ने करदी बच गई गवर्मेंट की ,जान ।।

''राष्ट्रीय आल्हा अर्थात् वीर गायन'' शीर्षक पुस्तक से।

लेखक : पोखपाल सिंह वर्मा ।

(1930)

साधु संदेश

संदेशा पूज्य गांधी का, सभी को हम सुना देंगे।
अगर है देश सोया तो, उसे अब हम जगा देंगे।।

तेज निद्रा उठे भारत! खड़ा हो न्याय पर डटके।
जुल्म अन्यायों के अब, यहां पर हम मिटा देंगे।।

बहाया खून जलियां में, हमारे बाल-बूड़ों का।
स्त्रियों की इज्जत ली हैं, मजा इसका चखा देंगे।।

तजेंगे मोह कौंसिल का, न लेंगे पद गुलामी के।
सूसेवा मातृ-भू की कर, उसे उन्नत बना देंगे।।

तजो स्कूलें तथा कालीज, हटा दो त्यों वकालत को।
स्वदेशी वस्त्रभूषा का, सबक़ सब को पड़ा देंगे।।

अदालत में न पाओ दुख, करो पंचायतें जारी।
मिटे अन्याय जल्दी से, प्रथा ऐसी चला देंगे।।

लड़ाई से न कुछ मतलब, न शस्त्रों की जरूरत है।
भभकती आग को हम अब, सुधारस से बुझा देंगे।।

कृष्ण, बुध, वीर राणा का, तथा ईसा, महम्मद का।
तिलक दादा, महात्मा का, संदेशा हम सुना देंगे।।

दयामय गोद में अपनी, उठा लो वीर भारत को।
शांतिरस प्रेम का प्याला, प्रभू सबको पिला देंगे।।

पुष्प! उनको संदेशा यह, करो जी जान से पालन।
अहिंसा न्याय से निर्भय, स्वराज्य अपना जमा लेंगे।।

''गांधी का डंका'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : प्रयाग सिंह वर्मा, फरुखाबाद।
मुद्रक : भारत प्रेस, काशी।
(सम्वत् 1978 वि०)

कर जायेंगे

भारत हमारा देश है हित, उसका निश्चय चाहेंगे ।
उसकी भलाई के लिये हम, कुछ न कुछ कर जायेंगे ।।

भारत हमारी जन्म भूमि, उसका ऋण हम पर बहुत ।
इसके चुकाने के लिए हम, कुछ न कुछ कर जायेंगे ।।भारत०।।

संसार के उद्धार हेतु, कृष्ण जन्में जेल में ।
फिर भला हम क्यों हटेंगे? कुछ न कुछ कर जायेंगे ।।भारत०।।

राक्षसों के नाश हेतु, राम बनवासी हुए ।
फिर भला हम क्यों डरेंगे? कुछ न कुछ कर जायेंगे ।।भारत०।।

चाहे कितने कष्ट क्यों न हमको हों इस वास्ते ।
सब सहेंगे मर मिटेंगे, कुछ न कुछ कर जायेंगे ।।भारत०।।

''राष्ट्रीय गीत'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : स्वामी विचारानन्द सरस्वती ।

मुद्रक : पं० विश्वम्भरदत्त चन्दोला, देहरादून ।

(सम्वत् 1978 वि०)

शहीदों की आहें

साही एक भगत सिंह को कर सूली फूले हो क्या ।
यहां लाखों भगत सूली जाने को हैं ।।

नौकर तू दिल में जरा सोच ले ।
तख्त शाही तेरा उल्ट जाने को है ।।

कुल जवां हिन्द के जागे शेरे बवर ।
अब तो भगत सिंह की डिउटी बजाने को है ।।

न बेकार होगा लहू वेकसों की ।
इनकी कुर्बानी अब रंग लाने को है ।।

दत्त, शेषर(1) , यतीन, और बिस्मिल ।
सभी मिल के भारत की बस्ती वसाने को है ।।

यह जोरो-जुलूम जो है नाजिल यहां ।
उसकी हस्ती ये साहे मिटाने को हैं ।।

रंजो अमल गम मुसीबत ये सब जो आये ।
वो सर पर उठाने को हैं ।।

''राष्ट्रीय गीत'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : स्वामी विचारानन्द सरस्वती ।
मुद्रक : पं० विश्वम्भरदत्त चन्दोला, देहरादून ।
(सम्वत् 1978 वि०)

(1) शेखर

ऐ फिरंगी

भगत सिंह आज जो जिन्दा नहीं लेकिन ।
जो जिन्दा नाम कर जाते हैं मरकर ऐसे होते हैं ।।

जमाना जगमगाये ताविशे अयशार से जिनकी ।
सिपहो हुरिपित के महो खावर ऐसे होते हैं ।।

कज़ा जब दार के तख्ते पै लाई खींच कर इनको ।
शुजाअत ने कहा बढ़कर दिलावर ऐसे होते हैं ।।

जो अपनी दिल नेवाजी से पिदले दुश्मन में घर कर ले ।
जोहों महवूव दो आलम के दिलायर ऐसे होते हैं ।।

कजा शरमा रही है और भगत सिंह आज जिन्दा है ।
मुहाते अश्कके पाकीजा गौहर ऐसे होते हैं ।।

वह जिनका नाम जिन्दा है ।
वह जिनका काम जिन्दा है ।।

''राष्ट्रीय गीत'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक : स्वामी विचारानन्द सरस्वती ।

मुद्रक : पं० विश्वम्भरदत्त चन्दोला, देहरादून ।

(सम्वत् 1978 वि०)

लाखों भगत चढ़ा डालो

करना है स्वीकार नहीं, स्वीकार मुझे शासन तेरा।
काल चक्र में अरे कुचक्री, काट डाल मस्तक मेरा।।

जुल्मों की जंजीर में तेरे, कड़ियां है पूरी-पूरी।
बांध मार यमराज मुझे, अपनी सम्हाल बरछी छूरी।।

डायर को ललकार कि, कर्जन को सर पर चढ़ आने दे।
चेम्सफोर्ड को छाती पर, मेरे ही लाल चवाने दे।।

मेरे लालों को मिट्टी में, फांसी दे बिथरा डालो।
एक भगत सुखदेव गुरु, क्या लाखों भगत चढ़ा डालो।।

चलने दो तलवार कि मेरा, तन तिल-तिल कट जाने दो।
मेरे मांस की बोटी-बोटी, कुत्तों में बंट जाने दो।।

यही खून का बूंद पाप, प्याले में तेरे समावेंगी।
और नहीं दरकार यही, बस काफी तुझे डुबावेंगी।।

''जिगर के टुकड़े'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : मास्टर विश्वनाथ प्रसाद गुप्त।
प्रकाशक : शिवशंभु प्रसाद मिश्र, नरवल।
(1931)

माता का संदेश

सुखदेव भगत सिंह राजगुरु तुम इन आंखों के तारे थे।
वृद्धा के आधार तुम्हीं, दुखिया के एक सहारे थे।।

चातक के स्वाती बिन्दू थे, तुम क्यों भूतल पर जाय पड़े।
ऐ नन्हे नादानों मैं तो रो रही थी खड़े-खड़े।।

निज देश हेतु तन दिया मुझे संतोष हुआ पूरा-पूरा।
है खेद यही जल्लादों का अब भी न हुआ कुण्ठित छूरा।।

तुम परम पिता की गोदी में हँस करके लोट लगाना ना।
हत्यारों की पोल खुलासा सब कहना जरा छिपाना ना।।

मैं धन्य हुई ऐ लाल तेरी, कुरबानी के हो जाने से।
लाखों मुझको लाल मिले तुम तीनों के खो जाने से।।

तीनों अस्थियों की माला मैं वक्षस्थल पर धारुंगी।
चौरासी के चक्कर में तुम, सब को नहीं बिसारुंगी।।

भस्मी तेरी से माल शुद्ध कर, तन पर उसे संवारुंगी।
ऐ मेरे प्यारे बच्चो! मैं चित से नहीं बिसारुंगी।।

''जिगर के टुकड़े'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : मास्टर विश्वनाथ प्रसाद गुप्त।
प्रकाशक : शिवशंभु प्रसाद मिश्रा।
(1931)

कब तक

चलोगे जालिम अकड़-अकड़ कर,
छिपाके अपने गुनाह कब तक?

सहे हैं जोरो जुलुम तुम्हारे,
कहो न निकलेगी आह कब तक?

मलाल रखकर सितम करो तो,
हमीं करेंगे निबाह कब तक?

बहुत तो ख़तरों में घूम आये,
मिलेगी अच्छी अब राह कब तक?

चला के जादू किसिम-किसिम के,
करोगे हम को तबाह कब तक?

हमारे खूं को निचोड़ने को,
रहेगी बदली निगाह कब तक?

ये रोशनी को फरेब करके,
रखोगे बोलो सियाह कब तक?

हमें गुलामी में पीसने की,
कहो करी है सलाह कब तक?

''जिगर के टुकड़े'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : मास्टर विश्वनाथ प्रसाद गुप्त ।
प्रकाशक : शिवशंभु प्रसाद मिश्र, नरवल ।
(1931)

22—103 Dte. of Archives/91

जले दिल को और जला गये

नहीं जिनको हम से थी कुछ ग़रज़ ।
वो अज़ीज़ बनके रुला गये ।।

बिना मुझ से पूछे कहे सुने ।
मेरे दिल पे कब्ज़ा जमा गये ।।

मैं नशे में अपने ही चूर था ।
भरा आखों बिच सरूर था ।।

मुझे प्यार करना तो दूर था ।
छूरी उलटी मुझ पै चला गये ।।

मेरे भोले दिल को न थी ख़बर ।
कि ये हक़ में होगा मेरे जहर ।।

मेरा हुस्नो जोबन लूट कर ।
फ़कत आहें भरना सिखा गये ।।

मैंने पूछा हज़रत आपने ।
किया जुल्म ''बेबस'' पै किसलिये ।।

ये सवाल सुनकर हँस पड़े ।
जले दिल को और जला गये ।।

''जिगर के टुकड़े'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : मास्टर विश्वनाथ प्रसाद गुप्त ।
प्रकाशक : शिवशंभु प्रसाद मिश्र, नरवल ।
(1931)

देश की घायल छाती

धर्म देश है, कर्म देश है, देश को भूल न जाना ।
प्यारे देश को भूल न जाना ।।

भारत के संतान अगर हो, भारत के काम आना ।
भारत के काम आना ।।

भारत ही वह डाली है, जिस डाली में तुम फूले ।
कली से जिसने फूल किया, उस भारत क्यों भूले ?

तलवारों की छाहों में भी, माता का गुण गाना ।
प्यारे देश को भूल न जाना ।।
भारत के गुण गाना ।।

हाय-हाय करती है हरदम, देश की घायल छाती ।
आंख नहीं खुलती है किसी की सोई हुई है जाती ।।

यह कह-कह कर, सोया भारत आज जगाना ।
हां देश को भूल न जाना ।।

''जिगर के टुकड़े'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : मास्टर विश्वनाथ प्रसाद गुप्त ।
प्रकाशक : शिवशंभु प्रसाद मिश्र, नरवल ।

(1931)

तैयार हैं हम

तैयार हैं हम जेल में, चक्की चलाने के लिये।
तैयार हैं हम जेल में, रस्सी बनाने के लिये।।

मंजूर सुरखी कूटना कोल्हू चलाना है हमें।
तैयार हैं हम अधभुना, दाना चबाने के लिये।।

कम्मल[1] बिछाने-ओढ़ने में, कष्ट ही है क्या हमें।
तैयार हैं हम भूमि को, बिस्तर बनाने के लिये।।

जांघिया कुरता-कड़े में, शर्म है कुछ भी नहीं।
तैयार हैं नंगे बदन, जीवन बिताने के लिये।।

निज धर्म पालन के लिये, डर तोप गोले का कहां।
तैयार हैं आनंद से, ¬म मौत पाने के लिये।।

जब तक न हो स्वाधीन भारत, स्वर्ग में भी सुख नहीं।
तैयार हैं हम नर्क का, ही कष्ट पाने के लिये।।

''जिगर के टुकड़े'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : मास्टर विश्वनाथ प्रसाद गुप्त।
प्रकाशक : शिवशंभु प्रसाद मिश्र, तरवल।

(1931)

(1) कम्बल

आज़ादी के दीवानों दा[1]

है आज जमाना ऐ वीरो, आज़ादी के दीवानों का ।
जीवन धन सब़ कुर्बान करो, है आज समय बलिदानों का ।।

अपना स्वराज्य लेना होगा, इंगलैण्ड आप भग जावेगा ।
अपने पैरों पर आप उठो, तुम तजो आस परमानों का ।।

हिमालय से सागर लो, अरु ब्रह्मपुत्र से गुर्जर देश ।
अटक-कटक लों आदर हो, अब गान्धी के फरमानों का ।।

हो तौक गुलामी टुक-टुक माता के बन्धन कट जावे ।
बलि वेदी पर बलि होबे को, अब चले झुण्ड मरदानों का ।।

चलु देश हिन्द में एक सिरे से, आग लगा दे हे भाई ।
हो देश बीच अब उथल-पुथल, अरु खौले खून जवानों का ।।

दास कन्हाई अरु भगत सिंह त्याग का मार्ग बताते हैं ।
आन कहीं नहीं जाने पावे, खून न हो अरमानों का ।।

फांसी से तुम नहीं डरो परवाह नहीं गोली बरसे ।
हो खुली संगीनों पै छाती, कौल रह़े मरदानों का ।।

''जिगर के टुकड़े'' शीर्षक पुस्तक से।
संग्रहकर्ता : मास्टर विश्वनाथ प्रसाद गुप्त ।
प्रकाशक : शिवशंभु प्रसाद मिश्र, नरवल ।
(1931)

(1) का

तुम्हारी ही आज पहचान

धनीजनों सम्पती लगा दो, बली लड़ा दो जान।
विद्वानो तुम बुद्धि लगाकर, रखलो भारत मान ।।तुम्हारी०।।

मारग[1] में हो कष्ट उन्हें तुम, सहलो फूल समान।
प्राण जायें तो जाये न जावे, किन्तु हिन्द की शान ।।तुम्हारी०।।

हिन्द तुम्हारा देश हिन्द ही धर्म सुखों की खान।
रहा हिन्द तो जन्म सुफल, नहीं जीवन है पाषाण ।।तुम्हारी०।।

माधव तजो हिन्द हित जग, सुख सेज खान औपान।
जबलों हो न स्वतंत्र तुम्हारा, प्यारा हिन्दुस्थान ।।तुम्हारी०।।

''जिगर के टुकड़े'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : मास्टर विश्वनाथ प्रसाद गुप्त।

प्रकाशक : शिवशंभु प्रसाद मिश्र, नरवल।

(1931)

(1) मार्ग

उद्‌वोधन

किस नींद में पड़े हो, भारत के रहने वालों ।
उठ कर तैयार हो जा, बिस्तर के सोने वालों ।।

जग के सभी मुसाफिर, कोशों निकल गये हैं ।
गफलत में क्यों पड़े हो, सबसे पिछुड़ने वालों ।।

श्रीकृष्ण के बचन को, मन में विचार कर लो ।
संग्राम से न डरना गीतों के पढ़ने वालों ।।

सुरधाम प्राप्त होगा, मरने से इस समर में ।
जीतोगे तो तुरन्त ही, शुभ राज्य पाने वालों ।।

पत्र हो गये हो, अर्जुन का वंश होकर ।
निज आबरू गवां के, कायर कहाने वालों ।।

''जिगर के टुकड़े'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : मास्टर विश्वनाथ प्रसाद गुप्त ।

प्रकाशक : शिवशंभु प्रसाद मिश्र, नरवल ।

(1931)

हमारा कर्तव्य

आज़ादी का युद्ध छिड़ा, निर्भय होकर लड़ना होगा ।
राष्ट्र मुक्ती निज आज हमें हँसते-हँसते मरना होगा ।।

अब भव्य भाव भरने होंगे, भारत के कोने-कोने में ।
पग पीछे नहीं हटायेंगे दुख सैन्य दलन करना होगा ।।

हां रिपु सेना हैं बहुत बढ़ी, इसकी हमको परवाह नहीं ।
क्रान्तियां करेंगे शान्तिमयी, हो अन्य हमारी चाह नहीं ।।

आवेगी हमें हराने को मैशीनगनें तोपें भारी ।
जेलों में भी जाना होगा, पर निकले मुंह से आह नहीं ।।

''जिगर के टुकड़े'' शीर्षक पुस्तक से।

संग्रहकर्ता : मास्टर विश्वनाथ प्रसाद गुप्त ।

प्रकाशक : शिवशंभु प्रसाद मिश्र, नरवल ।

(1931)

मौत का पैग़ाम

क्या हमारी मौत का पैग़ाम ही लाए हो तुम ।
जो डराते ख़ंज़रे नाचीज़ से हो बन के जम ।।

क्या क़यामत का है नेजा हाथ का खंज़र तेरे ।
जिंद हो या मौत-मल्कुट(1) या कि मशहर बुत(2) हो तुम ।।

है हिमाक़त ग़रतो असओ आज़मालो ज़ालिमों ।
आह मेरी के असर से जल्द फुँक जावोगे तुम ।।

खूं(3) का बदला तो हमको--खूंन से लेना नहीं ।
खींच कर हथियार को अरमां निकालो खूब(4) तुम ।।

''जालिमों का नाश'' शीर्षक पुस्तक से।

प्रकाशक : रामगोविन्द मिश्र, कानपुर ।

मुद्रित : नारायण प्रेस, कानपुर ।
(1922)

(1) मलिकुल मौत

(2) मशहरेबुत

(3) खून

(4) खूबे

MGIPF—103 Dte. of Archives/91—1,000.